सर्व दुःखों से मुक्ति

दादा भगवान प्ररूपित

दादा भगवान प्ररूपित

सर्व दुःखों से मुक्ति

संकलन : डॉ. नीरूबहन अमीन

प्रकाशक : दादा भगवान फाउन्डेशन के लिये
अजित सी. पटेल
दादा दर्शन, 5, ममतापार्क सोसायटी, नवगुजरात कॉलेज
के पीछे, उस्मानपुरा, अहमदाबाद - ३८० ०१४
फोन - (०७९) २७५४०४०८, २७५४३९७९
E-Mail : info@dadabhagwan.org

©
All Rights reserved - Dr. Niruben Amin
Trimandir, Simandhar City,
Ahmedabad-Kalol Highway, Post - Adalaj,
Dist.-Gandhinagar-382421, Gujarat, India.

प्रथम संस्करण : प्रत ३०००, मार्च, २००३
द्वितिय संस्करण : प्रत ३०००, अगस्त, २००५

भाव मूल्य : 'परम विनय' और
'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

द्रव्य मूल्य : १५ रुपये

लेसर कम्पोझ : दादा भगवान फाउन्डेशन, अहमदाबाद.

मुद्रक : महाविदेह फाउन्डेशन (प्रिंटिंग डिवीज़न),
पार्श्वनाथ चैम्बर्स, नये रिज़र्व बैंक के पास,
इन्कमटैक्स एरिया, अहमदाबाद-३८० ०१४.
फोन : (०७९) २७५४२९६४, २७५४०२१६

'दादा भगवान' कौन ?

जून १९५८ की एक संध्या का करीब छह बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन। प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर 'दादा भगवान' पूर्ण रूप से प्रगट हुए । और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्‌भुत आश्चर्य। एक घण्टे में उनको विश्व दर्शन हुआ। 'मैं कौन ? भगवान कौन ? जगत कौन चलाता है ? कर्म क्या ? मुक्ति क्या ?' इत्यादि जगत के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सन्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल, चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करने वाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष !

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षु जनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्‌भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से । उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात बिना क्रम के, और क्रम अर्थात सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात लिफ्ट मार्ग । शॉर्ट कट !

आपश्री स्वयं प्रत्येक को 'दादा भगवान कौन ?' का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ''यह दिखाई देनेवाले दादा भगवान नहीं हैं, वे तो 'ए. एम. पटेल' हैं। हम ज्ञानी पुरुष हैं, और भीतर प्रकट हुए हैं, वे 'दादा भगवान' हैं । दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं । वे आप में भी हैं । सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और 'यहाँ' संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं । दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ ।''

'व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं', इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसी के पास से पैसा नहीं लिया। बल्कि अपने व्यवसाय की अतिरिक्त कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

परम पूजनीय दादाश्री गाँव-गाँव, देश-विदेश परिभ्रमण करके मुमुक्षुजनों को सत्संग और स्वरूपज्ञान की प्राप्ति करवाते थे। आपश्री ने अपने जीवनकाल में ही पूजनीय डॉ. नीरूबहन अमीन को स्वरूपज्ञान (आत्मज्ञान) प्राप्त करवाने की ज्ञानसिद्धि प्रदान की थी। दादाश्री के देहविलय पश्चात आज भी पूजनीय डॉ. नीरूबहन अमीन गाँव-गाँव, देश-विदेश भ्रमण करके मुमुक्षु जनों को सत्संग और स्वरूपज्ञान की प्राप्ति, निमित्त भाव से करवा रही हैं, जिसका हजारों मुमुक्षु लाभ लेकर धन्यता का अनुभव कर रहे हैं।

● ● ●

संपादकीय

सांसारिक दु:ख किसे नहीं है? हर कोई उससे छूटना चाहता है। लेकिन वह छूट नहीं पाता। उससे छूटने का मार्ग क्या है? ज्ञानी पुरूष के मिलते ही सर्व दु:खों से मुक्ति मिलती है। औरों को जो दु:ख देता है, वह स्वयं दु:खी हुए बिना नहीं रहता।

सर्व दु:खों से मुक्ति कैसे पायी जाये ? सुख-दु:ख मिलने का यथार्थ कारण क्या है ? औरों को सुख देने से सुख मिलता है और दु:ख देने से दु:ख मिलता है। यह सुख-दु:ख प्राप्ति का कुदरती सिद्धांत है ! जिसे यह सिद्धांत संपूर्ण समझ में आ जाता है, वही किसी को बिलकुल दु:ख न देने की जागृति में रह सकता है। फिर मन से भी वह किसी को दु:ख नहीं पहुँचा सकता है। इसके लिए ज्ञानी पुरुष ही यथार्थ क्रियाकारी उपाय बता सकते हैं। परम पूज्य दादा भगवान, जो इस काल के ज्ञानी हुए, उन्होंने छोटा सा, सुंदर और संपूर्ण क्रियाकारी उपाय बताया है कि हररोज सुबह में हृदयपूर्वक पांच बार इतनी प्रार्थना करो कि 'प्राप्त मन-वचन-काया से इस जगत में किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दु:ख न हो, न हो, न हो।' इसके बाद आपकी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। किसी भी जीव को मारने का हमारा अधिकार बिल्कुल ही नहीं है, क्योंकि हम उसे बना नहीं सकते !

संसार में दु:ख क्यों है ? उसका रूट कॉज है अज्ञानता! मैं स्वयं कौन हूँ ? मेरा असली स्वरूप क्या है ? यह नहीं जानने से सारे दु:ख सर पर आ गये हैं। वास्तव में 'आत्मज्ञानियों' को इस संसार में एक भी दु:ख स्पर्श नहीं होता!

यदि आपको सुखी होना हो तो सदा वर्तमान में ही रहना! भूतकाल गया, सो गया। वह वापस कभी नहीं लौटता और भविष्यकाल किसी के हाथ में नहीं है। उसे कोई जानता भी नहीं। तो 'वर्तमान में रहे सो सदा ज्ञानी'!

गृहस्थ जीवन में बेटे-बेटियाँ, पत्नी, माँ-बाप, आदि की ओर से हमें जो दु:ख मिलते है, वे हमारे ही मोह के रीएक्शन से मिलते हैं। वीतराग को कुछ भोगना नहीं पड़ता, जीवन में। परम पूज्य दादा भगवान ने एक सुंदर बात बतायी है कि घर एक कंपनी है। इस कंपनी में घर के सारे मेम्बर्स शेयर होल्डर्स हैं। जिसका जितना शेयर, उतना उसके हिस्से में भुगतने का आयेगा। फिर सुख हो या दु:ख! मुनाफा हो या घाटा!

भगवान ने कहा है कि अंतर सुख और बाह्य सुख का बैलेन्स रखना चाहिये। बाह्य सुख बढ़ेगा तो अंतर सुख कम हो जायेगा और अंतर सुख बढ़ेगा तो बाह्य सुख कम हो जायेगा।

चिंता होने का कारण क्या है ? अहंकार, कर्तापन! वह जाये तो चिंता जाये।

कुदरत का दरअसल न्याय क्या है? हम अपनी भूलों से किस तरह से छूटें ? निजदोष क्षय किस तरह से किया जाये ? इन सारे प्रश्नों को पूज्यश्री ने आसानी से हल करने का रास्ता प्रस्तुत पुस्तक में बताया है।

जय सच्चिदानंद ।

- डॉ. नीरूबहन अमीन

निवेदन

'आप्तवाणी' मुख्य ग्रंथ है, जो परम पूज्य दादा भगवान के श्रीमुख के निकली 'ओरिजिनल' वाणी से बना है, उसी ग्रंथ को सात भागो में विभाजित करके प्रकाशित किया जा रहा है, ताकि वाचक को पढ़ने में सुविधा रहे।

1. ज्ञानी पुरूष की पहचान
2. सर्व दु:खों से मुक्ति
3. कर्म का विज्ञान
4. आत्मबोध
5. यथार्थ धर्म
6. अंत:करण का स्वरूप
7. जगत कर्ता कौन ?

परम पूज्य दादाश्री हिन्दी में बहुत कम बोलते थे, कभी हिन्दी भाषी लोग आते थे, जो गुजराती नहीं समझ पाते थे, उनके लिए पूज्यश्री हिन्दी बोल लेते थे, उसी वाणी को केसेटों में से ट्रान्स्क्राइब करके यह 'आप्तवाणी' ग्रंथ बना है। उसी आप्तवाणी ग्रंथ को फिर से संपादित करके यह सात छोटी पुस्तिकायें बनाई गयी हैं।

उनकी हिन्दी 'प्योर' हिन्दी नहीं है, फिर भी सुननेवाले को उनका अंतर आशय 'एक्जैक्ट' समझ में आता है। उनकी वाणी हृदयस्पर्शी, हृदयभेदी होने के कारण, जैसी निकली वैसी ही संकलित करके प्रस्तुत की गई है ताकि सुज्ञ वाचक को उनके 'डाइरेक्ट' शब्द पहुँचे। उनकी हिन्दी यानी गुजराती, अंग्रेजी और हिन्दी का मिश्रण। फिर भी सुनने में, पढ़ने में बहुत मीठी लगती है, नैचुरल लगती है, जीवंत लगती है। जो शब्द हैं, वह भाषा की दृष्टि से सीधे-सादे हैं किन्तु 'ज्ञानी पुरुष' का दर्शन निरावरण है, इसलिए उनके प्रत्येक वचन आशयपूर्ण, मार्मिक, मौलिक और सामनेवाले के व्यू पोइन्ट को एक्जैक्ट समझकर निकलने के कारण श्रोता के 'दर्शन' को सुस्पष्ट खोल देते हैं और अधिक ऊंचाई पर ले जाते हैं।

- डॉ. नीरूबहन अमीन

अनुक्रमणिका

		पेज नं.
१.	व्यवहार की खास दो बातें!	१
२.	मारने का अधिकार किसे?	२
३.	सुख-दु:ख का वास्तविक स्वरूप।	६
४.	सुखप्राप्ति के कारण !	१२
५.	क्या आपको दु:ख है?	१३
६.	ऊर्ध्वगति के Laws !	१६
७.	कुदरत की व्यवस्था का प्रमाण !	२२
८.	'ज्ञानी' मिले तो क्या लोगे?	२४
९.	व्यापार में धर्म रखा ?	२५
१०.	अन्डरहैन्ड के अन्डरहैन्ड बन सकोगे?	२६
११.	वर्तमान में रहोगे कैसे?	२९
१२.	अंतरसुख-बाह्यसुख का बैलेन्स!	३०
१३.	मनुष्य चिंता मुक्त हो सकता है?	३३
१४.	क्या आप शंकर के भक्त हैं?	३८
१५.	माँ-बाप की जिम्मेदारी कितनी?	४१
१६.	व्यवहार नि:शेष का इक्वेशन !	४२
१७.	हिसाबी व्यवहार को कब तक रियल मानोगे?	४५
१८.	व्यवहार के हिसाबी संबंध में समाधान कैसे ?	५२
१९.	गृहस्थी में मतभेद - सोल्युशन कैसे?	५५
२०.	बीबी से एड़जस्टमेन्ट की चाबी!	५८
२१.	व्यवहार में शंका ? - समाधान विज्ञान से !	६०
२२.	पिछले जन्म की पत्नी का क्या?	६१
२३.	व्यू पोइन्ट का मतभेद - उपाय क्या?	६२
२४.	संसार - अपनी ही दखलों का प्रतिघोष!	६५
२५.	कितने नुकसान झेलोगे? एक या दो?	६७
२६.	निमित्त को निमित्त समझें, तो?	७०
२७.	कुदरत का असल न्याय!	७१
२८.	अपनी भूल से छूटना कैसे?	७५
२९.	'निजदोष क्षय' का साधन!	७७

सर्व दु:खों से मुक्ति

व्यवहार की खास दो बातें!

प्रश्नकर्ता : हरेक आदमी जो जन्म लेता है, उसका व्यवहार में कर्तव्य क्या है?

दादाश्री : वह जो पेड़ होता है, उसका कर्तव्य क्या है? वह अपने आप ही जमीन में से पानी पीता है और फल दूसरों को देता है। पेड़ को फिर आप कुछ बदला देते हैं? ऐसे आप सारा दिन सब को सुख देना, किसी को दु:ख मत देना। फिर आपको सुख मिल जायेगा। और कुछ नहीं, इतना ही समझना है। अब दु:ख आये तो समझ लेना कि यह पीछे का अपना कोई हिसाब है, उससे आया है मगर अब तो दूसरे को सुख देने का व्यापार ही करना है।

बुद्धि का दुरुपयोग करोगें तो बाद में मेंटल (पागल) हो जाओगे। जो सभी लोगों को फँसाता है, वह बुद्धि के दुरूपयोग के बिना कोई आदमी को फँसा नहीं सकता। आँख का दुरुपयोग हुआ तो फिर अगले जन्म में आँख नहीं मिलेगी। कम दुरुपयोग किया तो आँख मिलेगी मगर उसका दु:ख ही रहेगा और पूरा दर्शन नहीं होगा (पूरी दृष्टि नहीं होगी), ऐसे पूरा फायदा नहीं मिलेगा। हाथ का दुरुपयोग किया तो हाथ नहीं मिलेगा और वाणी का दुरुपयोग किया तो सारी वाणी ही चली जाएगी। सभी इन्द्रियों का सदुपयोग होना चाहिये।

दूसरी बात भगवान की क्या है कि बिना हक़ की कोई चीज मत लो। बिना हक़ याने कोई भी चीज जो तुम्हारी मालिकी की नहीं है, वहाँ तुम दृष्टि भी मत बिगाड़ो। ये लोग रास्ते में घूमते हैं तो कोई औरत अच्छी देखी कि उनकी दृष्टि बिगड़ जाती है। जो आदमी भगवान को मानता है, वह आदमी ऐसा तो नहीं होना चाहिये। क्योंकि वह औरत दूसरे की है। तुम्हारे लिए बिना हक़ की है, तुम्हारा हक़ नहीं है उस पर। मनुष्य में भी बुरे विचार आयें, तो मनुष्य में और पशु में क्या फर्क है? दृष्टि भी बुरी नहीं होनी चाहिये, मन भी बिगड़ना नहीं चाहिये। नहीं तो उसकी बहुत जोखिमदारी है। बिना हक़ का विषय भोगना नहीं चाहिये। कुरान में भी लिखा है कि भले चार बार शादी करो मगर दूसरे की औरत पर दृष्टि मत बिगाड़ो। दूसरे की औरत पर दृष्टि बिगाड़े तो उसे बिना हक़ का भोगना बोला जाता है। हमारी इतनी ही बात सब की समझ में आ जाए तो हिन्दुस्तान देवलोक जैसा हो जायेगा।

(केवल) हक़ का विषय भोगना चाहिये। बिना हक़ के विषय से बहुत नुकसान हो जाता है, सब का माइंड फ्रैक्चर हो जाता है। औरत का माइंड फैक्चर हो जाता है और पुरुष का माइंड भी फ्रैक्चर हो जाता है। अपने हक़ का विषय भुगतने में फीयर (डर) नहीं लगता और बिना हक़ में बहुत फीअर लगता है, विश्वासघात होता है। जो बिना हक़ का पैसा है, वह भी नहीं लेना चाहिये। कुदरत ने जो कुछ दिया है वह ही तुम्हारे हक़ का है, वही तुम्हारे लिए है। ये सब सेकंडरी स्टेज की बात कही। जो रीयल की बात है, वह स्टेज तो बहुत ऊँचा है। वह रीयल जानना हो और आपकी समझ में आ जायें तो हमें कोई हरकत नहीं है, हम वह भी बता देंगे। सब बता देंगे। ज्ञान भी दे देंगे और सेल्फ रीयलाइजेशन (आत्मसाक्षात्कार) भी हो जायेगा।

मारने का अधिकार किसे ?

जो क्रियेशन है, उसके अंदर भगवान नहीं है। क्रियेशन तो मैन

मेड (मानव निर्मित) होता है। मैन मेड में भगवान नहीं है। क्रियेचरर्स (प्राणी) के अंदर भगवान हैं, वह जिम्मेदारी समझ लेना। क्रियेशन को तोड़ डालोगे, उसके मालिक को पूछकर, तो कोई पाप नहीं लगेगा। क्रियेचर्स को मार डालेगा तो पाप लगेगा, क्योंकि अंदर भगवान बैठे हैं। ये बग्स(खटमल) होते हैं न, उनको कभी मारते हो?

प्रश्नकर्ता : उसको तो देखते ही मार देता हूँ।

दादाश्री : ऐसा! इतना ज़ोरदार आदमी (!!)

प्रश्नकर्ता : ऐसे बहुत सारे लोग हैं लेकिन यहाँ पर बैठने के बाद ऐसा नहीं बोलते कि मैं मारता हूँ।

दादाश्री : मगर जिम्मेदारी तो उनकी ही है न, मारने की? खटमल मारने से फिर खटमल काटते नहीं कभी? काटना बंद हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : दूसरे आ जाते हैं।

दादाश्री : वे बड़े बड़े मजबूत लोग भी जब नींद में होते हैं, तब ये खटमल उनके पास खाना खाते हैं (खून चूसते हैं)। नींद में सारी रात काटते हैं। वो जागने के बाद नहीं खाने देता। पर कोई खटमल भूखा नहीं रहता! उनकी खुराक ही ब्लड(खून) है। सब लोग सो गये कि वे सारी रात खाते हैं, तो फिर जागते हुए भी खाने दो न! होटल चालू रखो। मच्छर भी काटते हैं? उसका क्या करते हो?

प्रश्नकर्ता : मार देता हूँ।

दादाश्री : वह किसकी जिम्मेदारी है?! कोई साइंटिस्ट एक भी मच्छर बना नहीं सकता। एक मच्छर भी कोई बना सकता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो फिर, जो चीज हम बना नहीं सकते, उसको मारने का अधिकार नहीं है। जो बना सकता है, उसको ही तोड़ने का अधिकार

है। पुलिसवाला अगर गाली देता है, तो क्या करते हो? उसको मारते हो?

प्रश्नकर्ता : उसके सामने तो चुप रहना ही पड़ता है।

दादाश्री : और बाघ के पास, शेर के पास क्या होता है?

सभी जीव के अंदर भगवान हैं, तो किसी भी जीव को तुम मारोगे क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा नहीं करना चाहिये।

दादाश्री : हाँ, अपने से किसी भी जीव को दु:ख न हो, ऐसा करने का। छोटे से छोटा जीव हो तो भी उसको दु:ख नहीं हो ऐसे चलने का, ऐसे रहने का। घर में किसी को दु:ख देते हो? मदर (माताजी) को, फादर (पिताजी) को?

प्रश्नकर्ता : बिलकुल नहीं।

दादाश्री : तो फिर किसको दु:ख देते हो?

प्रश्नकर्ता : किसी को भी नहीं।

दादाश्री : और तुमको कोई दु:ख देता है? कौन देता है?

प्रश्नकर्ता : घर में कोई नहीं देता, मगर बाहर सब दु:ख देते हैं।

दादाश्री : सौ-दो सौ आदमी दु:ख देते हैं या दो-चार आदमी दु:ख देते हैं?

प्रश्नकर्ता : दो-चार।

दादाश्री : ओहोहोहो! इतनी बड़ी दुनिया में दो-चार का क्या हिसाब?! यहाँ पूरे रूम (कमरे) में मच्छर हों और सब मच्छर काटें तो ठीक बात है। (पर) ये तो दो-चार मच्छर काटें तो कौन सी बड़ी बात है?!

प्रश्नकर्ता : दो ही आदमी दु:ख देनेवाले हों तो भी बहुत होता है।

दादाश्री : ऐसा? तुम किसी को दु:ख नहीं दोगे तो बाहर वाला कोई भी दु:ख नहीं देगा। तुमने कभी किसी को दु:ख दिया था? दु:ख दिये बिना तो अपने को कोई दु:ख नहीं देता। हमें कोई दु:ख नहीं देता।

प्रश्नकर्ता : मुझे विश्वास है कि इस जन्म में मैंने किसी को दु:ख नहीं दिया, फिर भी लोग मुझे दु:ख देते हैं।

दादाश्री : हाँ, वह इस जन्म का नहीं होगा, तो वह पीछे का हिसाब होगा। इस जन्म के बही-खाते में नहीं मिलता है, यह पिछले बही-खाते (खाते) का है। मगर कुछ न कुछ तो होगा न? वो सब पीछे का बही-खाता चल सकता है अभी। तुमको बहुत दु:ख देता है? मारता-पीटता है? जेल में रख देता है? क्या दु:ख देता है? देखो, दु:ख तो किसको बोला जाता है कि कोई आदमी आपको खाना नहीं दे तो अपने को दु:ख है, सोने की जगह नहीं मिले तो दु:ख है, कपड़े पहनने को नहीं मिले तो दु:ख है। तो फिर तुमको क्या कपड़े पहनने को नहीं मिलते?

प्रश्नकर्ता : वह सब तो मिलता है।

दादाश्री : तो फिर क्या दु:ख है तुमको? तुमको जो दु:ख देता है, उसको हमारे पास ले आओ, तो हम बोल देंगे कि इसका क्या हिसाब है, इसका हिसाब पूरा कर दो, सब जमा कर दो, खाता बंद कर दो। ऐसा करोगे न? हाँ, बुला लो। हम उसका खाता पूरा करा देंगे। तो सब दु:ख पूरा हो जायेगा।

इधर आया है, हमें मिला है, तो उसके पास कोई दु:ख रहता ही नहीं।

सुख-दु:ख का वास्तविक स्वरूप।

इस दुनिया में दु:ख है ही नहीं। मगर हर कोई आदमी दु:खी है, वह रोंग बिलीफ से दु:खी है। और सारा दिन क्या बोलता है, 'मैं कितना दु:खी हूँ, मैं कितना दु:खी हूँ।' उसको पूछो कि 'आज खाने का चावल है? तेल है? सब कुछ है, तो तुमको कोई दु:ख नहीं है।' मगर वाइफ (पत्नी) के साथ झगड़ा करता है, लड़के के साथ झगड़ा करता है और दु:खी होता है।

दुनिया का कायदा क्या है ? आपको अगले जन्म में क्या क्या चाहिये, उसका टेंडर भरो। क्योंकि आपका ऊपरी कोई नहीं है। जो है वह आप खुद ही हैं। मगर आप जिस माइल पर हैं, उस माइल की चीज़ ही आपको मिलेगी, दूसरे माइल की चीज़ नहीं मिलेगी! आप 97 माइल पर हैं तो 97 माइल पर जो कुछ आपको चाहिये, वह बोल दो, तो आप बता देंगे कि 'हमको रहने का मकान भी चाहिये, तीन रूम चाहिये।' वो सब लिख लिया। फिर उतनी ही चीज आपको मिलती है। तो फिर दु:ख कैसे होता है? कि हमारे पास तीन रूम (कमरे) हैं और हमारे फ्रेन्ड (मित्र) के पास नौ रूम हैं। यह दु:ख की शुरूआत हो गई, बिगिनिंग ऑफ माइजरी और टेंडर में सिर्फ पत्नी लिखी थी, मगर पूर्ति के समय सास-ससुर, साला-साली, वे सभी साथ आयेंगे। आपकी समझ में आया न? एक औरत के लिए कितनी जिम्मेदारी लेनी पड़ती है।

प्रश्नकर्ता : इस संसार में प्राणी दु:खी क्यों हैं? इसका निदान क्या है? इससे छुटकारा किस तरह मिले?

दादाश्री : किसी भी प्राणी को जो दु:ख है, तो वह उसकी अज्ञानता से है। चार आदमी इस रास्ते के बदले उस रास्ते पे चले गये तो उनको दु:ख होता है कि नहीं? बस, ऐसा ही दु:ख है। अज्ञानता से दु:ख है और ज्ञान से सुख है। अज्ञानता से माया का अपने ऊपर राज

हो जाता है और ज्ञान से भगवान का राज हो जाता है।

एक बड़ा सेठ है, उसने दारू नहीं पिया तब तक तो कैसी अच्छी बातें करता है। फिर दारू की एक बोतल पी ली, तो कोई अलग ही बातें बोलता है। वह कौन सी शक्ति काम करती है ?

प्रश्नकर्ता : दारू काम करती है।

दादाश्री : तो ये जगत भी दारू से चलता है, मगर ये मोह रूपी ब्राडी (दारू) से चल रहा है। मनुष्य का मोह चला जाये, तो समाधि हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : ट्रेन से आते वक्त प्लेटफोर्म पर एक अंधे को देखा, तब मेरे मन में हुआ कि दुनिया में सब दु:खी हैं।

दादाश्री : जगत में दो प्रकार के अंधे मनुष्य हैं। एक तो अंधा जैसा आपने देखा था, जिसकी आँखे नहीं थी और अंधा हो गया था और दूसरे, इस वर्ल्ड में जो सब लोग हैं, वे भी अंधे हैं। आँख से अंधा है, वह अपना खुद का नुकसान नहीं करता है और ये दूसरे लोग अपना खुद का सारा दिन नुकसान ही करते रहते हैं। वे भगवान की भाषा में आँख से देखते हुए भी अंधे हैं।

भगवान की तो एक ही भाषा है और लोगों की सबकी अलग-अलग भाषा है। तुम औरत को डिवोर्स दोगे और दूसरा कहता है कि हमें औरत चाहिये। तुम्हारी लैंग्वेज (भाषा) में वह औरत बहुत बुरी है और दूसरे की लैंग्वेज में वह बहुत अच्छी है। मगर भगवान की भाषा में वे दोनों बातें गलत हैं। यह लोगों की भाषा की बात है।

दुनिया में दु:ख है ही नहीं। मगर अंधा है, इससे दु:ख लगता है। जब धीरे धीरे आँखें खुलती है, तब थोड़ा थोड़ा सुख लगता है। फिर जब पूरी आँख खुलती है तो दु:ख है ही नहीं दुनिया में। दुनिया में दु:ख होता ही नहीं कभी। सारे दु:ख अपनी अपनी 'भाषा' में है।

अगर अंधा नहीं होता, तो दुःख ही नहीं। इसलिए वीतराग भगवान ने बोला था कि समकित कर लो। समकित होने पर थोड़ी थोड़ी आँखे खुलेगी और थोड़ा थोड़ा सुख बढ़ेगा। पूरी आँखें खुल गईं कि मोक्ष हो गया।

रोंग बिलीफ को मिथ्या दर्शन बोलते हैं और राइट बिलीफ को सम्यक् दर्शन बोलते हैं। मिथ्या दर्शन से भौतिक सुख मिलता है। वह आरोपित सुख है, सच्चा सुख नहीं है। सच्चा सुख आत्मा में है। मगर यह क्या बोलता है कि इस जलेबी में सुख है। जलेबी में सुख है ही नहीं। मगर कुछ लोग बोलेंगे कि जलेबी में सुख है और दूसरे लोग बोलेंगे कि जलेबी हमें पसंद नहीं है। कुछ लोग जलेबी को हाथ भी नहीं लगाते। यह तो जैसा भाव किया ऐसा अंदर से ही सुख निकलता है। आत्मा का सुख आरोपित करता है कि जलेबी में सुख है, फिर जलेबी खाता है तो उसको अच्छा लगता है। हम तो पूरी जिंदगी में एक घड़ी भी नहीं लाये। क्योंकि इसमें क्या सुख है? सुख तो आत्मा के अंदर है। वह स्वतंत्र सुख है। हमें जेल में ले जायें तो भी हमें अच्छा लगेगा कि हम घर पर होते हैं, तो दरवाजा भी हमें खुद ही बंद करना पड़ता है, इधर तो पुलिसवाला दरवाजा बंद करेगा। हमारा तो फायदा ही है। ऐसी दृष्टि बदल गयी तो कोई परेशानी है फिर? परेशानी सब लौकिक दृष्टि से है। वह लौकिक दृष्टि सब रोंग बिलीफ है। सब लोग जिसमें सुख मानते हैं, उसमें आप भी सुख मानते हैं, वो रोंग बिलीफ है। सब लोग जिसमें सुख मानते हैं, मगर उसमें से सुख तो मिलता ही नहीं और वह आरोपित भाव ही है। उस सुख के पीछे फिर दुःख आता है। आपने दुःख देखा है कभी? हमने पच्चीस साल से कभी दुःख नहीं देखा है। सुख भी नहीं, दुःख भी नहीं, हमको तो निरंतर परमानंद है। सुख और दुःख है, वह तो वेदना है। जिसको आम पसंद है, वह आम खायेगा तो उसको ठंडक हो जाती है। वह साता वेदनीय है और जिसको आम पसंद नहीं है, उसको आम खिलायेंगे तो उसको असाता होती है।

यह असाता वेदनीय है। यह वेदनीय सच्चा सुख नहीं है। वह सच्चा सुख तो सनातन सुख है।

जैसे मछ़ली तड़पती है, ऐसे सारा दिन पूरी दुनिया तड़प रही है। चिंता हो गयी तो फिर वह रिलेटिव एडजस्टमेंट करता है। नहीं तो दूसरी क्या मेडिसिन (दवा) लगायें? सिनेमा में चलो। लेकिन इनको मालूम नहीं है कि इस दवा से क्या फायदा है? इससे तो वह अधोगति में जायेगा। अंदर खराबी हो गई, चिंता हो गई, उस समय यदि कुछ योग में बैठ गया, भजन में बैठ गया और नहीं पसंद हो तो भी स्ट्रोंग रहा तो वो ऊपर चढ़ता है। जो पसंद है, वहाँ मूर्छित होता है और वह नीचे चला जाता है। ऐसे सिनेमा जाने से नीचे ही चला जायेगा। 'नहीं पसंद आता' वह सब आत्मा का विटामिन है मगर उसका खयाल नहीं है।

एक सेकन्ड भी क्लेश करने के लिए यह वर्ल्ड (जगत)नहीं है। जो हो रहा है वह न्याय ही हो रहा है। कोर्ट का न्याय तो पक्षपाती होता है, गलत भी होता है। मगर कुदरत का न्याय तो दरअसल न्याय ही होता है। जो दिव्यचक्षु से देख रहे हैं, उनको बिल्कुल करेक्ट (सही) दिखता है। मगर जिसके पास वह दृष्टि नहीं, उसकी समझ में नहीं आयेगा, तब तक वह दुःखी ही होता रहेगा।

केवल रीयल व्यू पोइन्ट नहीं चलेगा, रिलेटिव व्यू पोइन्ट पहले चाहिये। दुःख रिलेटिव में है और पूरी दुनिया ही दुःखी है। रीयल में दुःख नहीं है। रीयल में दृष्टि मिल गई, फिर कोई दुःख नहीं है। मगर अभी तक दृष्टि रिलेटिव में ही है। हम आपकी रिलेटिव दृष्टि को रीयल कर देंगे, तो फिर आपको आनंद ही रहेगा। मात्र दृष्टि का फर्क है। हम यह साइड देखते हैं, आप वह साइड देखते हैं।

जहाँ सच्चिदानंद है, वहाँ कुछ भी दुःख नहीं है और दुःख है वहाँ सच्चिदानंद नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अब मैं मानता हूँ कि दु:ख है ही नहीं।

दादाश्री : हाँ, दु:ख तो है ही नहीं। दु:ख तो सिर्फ रोंग बिलीफ ही है। जिसको रोंग बिलीफ है, वहाँ दु:ख है। जिसको रोंग बिलीफ नहीं, वहाँ दु:ख ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आध्यात्मिक दृष्टि से तो दु:ख है ही नहीं।

दादाश्री : हाँ, मगर ऐसी बात बोलने से तो नहीं चलेगा। अध्यात्म में तो कुछ दु:ख ही नहीं है लेकिन ऐसा व्यवहार में नहीं चलेगा। हरेक आदमी को दु:ख होता है, यह फैक्ट (सच) बात है और 'ज्ञानी पुरुष' को तो आधि, व्याधि और उपाधि में भी समाधि रहती है, यह भी फैक्ट बात है। आपको कभी दु:ख हुआ है?

प्रश्नकर्ता : मैं मान रहा हूँ कि अध्यात्म में दु:ख है ही नहीं।

दादाश्री : वह तो आपकी मान्यता से है, आपकी बिलीफ में ऐसा है कि दु:ख है ही नहीं। मगर आपको तो दु:ख है कि नहीं?

प्रश्नकर्ता : वह तो वेदना है।

दादाश्री : वेदना? तो वेदना ही दु:ख है।

प्रश्नकर्ता : दु:ख मन को होगा, वेदना शरीर को होगी।

दादाश्री : नहीं, वेदना मन को ही होती है। शरीर को भी वेदना होती है। मगर वेदना क्यों कहा? कि मन है इसलिए वेदना कहा, मन नहीं होता तो वेदना नहीं होती थी। मन को ही वेदना होती है।

सारा जगत अंधश्रद्धा पर चलता हैं। यह पानी पीते हैं, तो उसमें किसी ने पोइजन (जहर) नहीं डाला उसकी क्या गारंटी है? मगर अंधश्रद्धा से पानी पीते हैं न ?! ये खाना खाते हैं, उसमें क्या डाला है, उसकी क्या कुछ गारंटी है ? मगर जगत में सब अंधश्रद्धा पर ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : श्रद्धा के बल पर हमारे दु:ख हम भूल सकते हैं कि नहीं ?

दादाश्री : श्रद्धा दो प्रकार की है - एक रोंग बिलीफ है और एक राइट बिलीफ है। आपको रोंग बिलीफ की श्रद्धा से कुछ फायदा नहीं मिलेगा। थोड़ी देर शांति रहेगी, मगर पूरा फायदा नहीं मिलेगा, प्रोब्लम सोल्व नहीं हो जायेगा। आपका नाम क्या है?

प्रश्नकर्ता : रवीन्द्र।

दादाश्री : क्या आप सचमुच रवीन्द्र हैं? आप रवीन्द्र हैं वह सच बात हैं?

प्रश्नकर्ता : हमें तो सच लगता है।

दादाश्री : यह तो आपका नाम है, यह पहचान के लिए है, मगर आप कौन हैं?

प्रश्नकर्ता : यह पहचानने की कहाँ ताकत (क्षमता) है?

दादाश्री : उसें पहचानने की ज़रूरत है। आप रवीन्द्र हैं, यह हम भी मानते हैं, वह पहचान के लिए है। मगर आपको ऐसी श्रद्धा हो गई है, कि मैं रवीन्द्र ही हूँ। यह रोंग बिलीफ है।

प्रश्नकर्ता : तो सही बिलीफ क्या है?

दादाश्री : वह सही बिलीफ 'ज्ञानी पुरुष' दे देते हैं। सब रोंग बिलीफ फ्रेक्चर करते हैं और राइट बिलीफ दे देते हैं।

खुद का स्वरूप जान लिया, फिर बिलकुल शांति रहती है। जहाँ तक यह नहीं जाना, वहाँ तक दु:ख है। 'ज्ञानी पुरुष' की कृपा से खुद की पहचान हो सकती है। फिर सब दु:ख चले जाते हैं। आसपास दु:ख हो, उसमें भी समाधि रहे, उसका नाम वीतराग विज्ञान। कोई गाली दे

तो भी सुख नहीं जाता। और इस संसार के सब लोग क्या करते हैं? किसी ने गाली दी तो बर्दाश्त कर लेते हैं। लेकिन जब खुद की पहचान हो गयी, तो फिर कुछ बर्दाश्त नहीं करना पड़ता। इतना आनंद होता है कि फिर कुछ दुःख स्पर्श करता ही नहीं।

सुख प्राप्ति के कारण !

किसी भी आदमी को परेशान नहीं करना चाहिये। मानवधर्म तो होना चाहिये न? मानवधर्म क्या कहता है कि आपको सुख कब मिलेगा? जब आप दूसरों को सुख देंगे तो आपको सुख मिलेगा। दूसरों को जब दुःख देंगे तो आपको दुःख मिलेगा। इसलिए सबको सुख दें। इसमें फर्स्ट प्रिफरेंस मनुष्य हैं। वही मानवधर्म है। इससे आगे भी धर्म है, वह लास्ट (अंतिम) धर्म है। उसमें मन में भी हिंसा नहीं होनी चाहिये।

एक आदमी रोड़ पर चल रहा है और सामने से एक स्कूटरवाला आया और टकरा गया, एक्सिडेन्ट हुआ। रास्ते पर जानेवाले लोग हैं, उनको अंदर दुःख हो जायेगा, तो कोई आदमी तो अपनी धोती फाड़कर उसको बांध देता है। सौ रुपये की धोती है, मगर उस समय हिसाब नहीं देखता कि मैं क्या कर रहा हूँ। जब धोती फाड़कर बांधेगा, तब उसको आनंद होता है। धोती फाड़ दी, उसका बदला उसी समय मिल जाता है। क्योंकि तुम्हारी जो चीज है, वह दूसरे के लिए दी, उससे आनंद ही होता है। खुद के लिए लगाने पर आनंद नहीं होता है।

हमारी लाइफ ऐसे पहले से ही दूसरों के लिए ही है। हमने कभी हमारे लिए कुछ किया ही नहीं। तो हमें कितना आनंद होता होगा! उस समय हमें ज्ञान नहीं था, तो भी हम क्या करते थे, कि भई, आपको क्या तकलीफ है? आपको क्या तकलीफ है? ऐसा सबको पूछते थे और हेल्प करते थे।

प्रश्नकर्ता : भूतकाल भूलाया नहीं जाता तो क्या करना?

दादाश्री : भूतकाल, Past time gone for ever ! Don't worry for past time ! जो भूतकाल हो गया, उसके लिए तो कोई फूलीश (मूर्ख) आदमी भी नहीं सोचता। तो भूतकाल गोन, वह सोचने का नहीं और भविष्यकाल 'व्यवस्थित' के ताबे में है। तो हमें क्या करने का? वर्तमान में रहने का। अभी हम इधर आये न, तो हम तुम्हारे साथ बात करते हैं, उसे आराम से सुनना । दूसरी किसी भी चीज की तलाश नहीं करना। ऐसे वर्तमान में रहने का।

अंग्रेजी में जो बोलते हैं कि 'work while you work & play while you play'. तो वहाँ फोरीन में कई लोगों को ऐसा रहता है और इधर किसी आदमी को ऐसा नहीं रहता, क्योंकि यहाँ विकल्पी लोग हैं।

जिसके हाथ में वर्तमान आ गया, उसे पद भगवान से भी ऊँचा कहा जाता है।

क्या आपको दुःख है ?

प्रश्नकर्ता : हमने बड़ी प्रामाणिकता से नौकरी की है, फिर भी आजकल हमारे सिर पर परेशानियाँ बहुत हैं, कभी कभी रात को नींद भी नहीं आती। आप कुछ रास्ता दिखाइये।

दादाश्री : अरे, किस लिए परेशानियों की चिंता रखकर फिरते हो? सारी दुनिया की परेशानियाँ सिर पर रख लीं, यह तो ओवरवाइजनेस है। Come to the wiseness !! और बोलो कि 'हमें कोई तकलीफ नहीं। हमारे जैसा कोई सुखी आदमी नहीं है।' रात को थोड़ी खिचड़ी और थोड़ी सब्जी मिली तो फिर सारी रात चैन से सो पायेंगे। आपने प्रामाणिकता से सर्विस की है, फिर आपके पास भगवान का सर्टिफिकेट है, नहीं तो इस काल में ऐसा सर्टिफिकेट कहाँ से लायें। देखो न, फिर भी सिर पर कितना बोझ लेकर फिरते हो ! अब घर जा

कर औरत को, बच्चों को बोल दो कि, 'अपने को भगवान ने बहुत दिया है और अपने को बहुत सुख है।' ऐसा बोलकर सब साथ में आराम से चाय पिओ। ये दुनिया अपनी ही है!!

कहाँ से ऐसा ज्ञान लाये ? यह ओवरवाइज का ज्ञान आप कहाँ से लायें? सारे गाँव की चिंता लेकर फिरते हो!! किस लिए बुद्धि चलाते हो? बुद्धि के कहने पर चलोगे तो एक दिन बुद्धू हो जाओगे। जितने लोग बुद्धि को डेवलप करने को गये कि सब बुद्धू हो गये। बुद्धि तो लाइट (प्रकाश) है मात्र। लाइट से काम लेने का है। हम ज्ञानी होकर भी हमारे पास बुद्धि बिलकुल नहीं है, हम अबुध हैं और तुम तो बुद्धि चलाते हो, उसको डेवलप करते हो। बुद्धि को ज्यादा डेवलप मत करो, नहीं तो बुद्धू हो जाओगे। बुद्धि तो अंदर बोले कि, 'अपने को फ्लेट नहीं देगा, तो क्या होगा?' इसमें क्या होनेवाला है?! तुम्हारे फ्लेट में वह रहता है, तो वह उसकी मर्ज़ी की बात है? उसको संडास (पाखाना) जाने की शक्ति भी नहीं है। तो रहने वाला क्या करेगा? वह भी कर्म का गुलाम है। इस संसार में किसी का गुनाह नहीं है। जिसको अड़चन आती है, उसका गुनाह है। आपको परेशानी हुई तो वह आपका गुनाह है। इसमें आपका पाप है और सामनेवाले का गुनाह नहीं है, उसका पुण्य है। आज शाम को खाना तो मिल जायेगा न? आपको खाने-पीने की तकलीफ नहीं है न? वह मिल गया तो बहुत हो गया, आज तो हम दिल्ली के बादशाह हैं। कल की बात कल देखी जायेगी। कल यदि नींद से जागे और बिस्तर में से उठे तो समझ लेना कि आज का दिन मिल गया। दूसरा आगे का विचार ही नहीं करने का। भगवान क्या बोलते हैं, 'मैं उसके लिए सोचता हूँ और यह अपने खुद के लिए सोचता है, तो फिर मैं छोड़ देता हूँ।' भगवान के पास बच्चे की तरह रहना चाहिये। अपने हाथ में लगाम नहीं लेने की। और बुद्धि को बोलो कि, 'अब तुम्हारी बात हम सुनने वाले नहीं। हमको तुम्हारी सलाह पसंद नहीं आती है,'

ऐसा बुद्धि का इन्सल्ट (अपमान) कर देने का। जो बुरी बात बताती है, जिसके साथ ठीक नहीं लगे तो उसका इन्सल्ट कर देने का। अपने पास कोई दुःख ही नहीं है, दुःख आने वाला भी नहीं। सिर्फ भड़कता ही रहता है कि ऐसा हो जायेगा, वैसा हो जायेगा। अरे, कुछ भी होनेवाला नहीं, हम तो मालिक हैं। मालिक को क्या होनेवाला है?

सुख भी क़ीमती है और दुःख भी क़ीमती है। मुफ्त में तो किसी को सुख भी नहीं मिलता है और दुःख भी नहीं मिलता है। दुःख की क़ीमत देनी पड़ती है फिर दुःख मिलता है। हमने क़ीमत भरी नहीं है, इसलिए हमको दुःख आता नहीं है। ये क्रोध, मान, माया, लोभ सब आपके पास तैयार हैं, इसलिए तुम वे भर देते हो, हमारे पास ये कुछ नहीं है। हमको तो ये सुख भी नहीं चाहिये और दुःख भी नहीं चाहिये। ये सब कल्पित हैं। वह तो कल्पना की है आपने। कोई आदमी बोले कि हमको लड्डू ठीक नहीं लगता है, तो उसको अच्छा नहीं लगेगा। और तुमको लड्डू ठीक लगता है, तो तुमको अच्छा लगेगा। तुमने कल्पना की तो तुमको अच्छा लगता है। आपने आत्मा का आनंद इसमें डाला, तो फिर आनंद लगा। किसी चीज में जो आनंद होता नहीं है, वो तो आपने कल्पना की, उसकी करामात है। बाहर की किसी भी चीज में आनंद नहीं है। आनंद तो, अपने खुद के अंदर ही है। खुद के स्वरूप में ही आनंद है।

रीयली स्पीकिंग (वास्तव में), इस दुनिया में दुःख और सुख नहीं है। 'हमें यह दुःख है, वह दुःख है' वह सब By relative view point से है, सिर्फ कल्पना है। आप बोलें कि, 'हम पैसे की रिश्वत नहीं लेते।' इसमें ही हमको सुख है। और दूसरा बोलता है कि 'पैसे की रिश्वत लेने में हमको सुख है।' वो Relative view point है, not Real view point !

जब तक भौतिक सुख प्रिय है, तब तक भगवान नहीं मिलते हैं। हमको भौतिक सुख नहीं चाहिये, ऐसा यदि तय कर लिया तो भगवान

मिल जाते हैं। हम भी खाते-पीते हैं मगर हमको नहीं चाहिये, फिर भी ऐसे ही आ जाता है। हमको अपना खुद का सुख मिला, फिर ओर क्या चाहिये ? खुद का बहुत सुख आ जाये, उसको सनातन सुख बोला जाता है। अतीन्द्रिय सुख का किंचित्मात्र टेस्ट (स्वाद) कर लिया तो दूसरा सब इन्द्रिय सुख फीका लगेगा। अतीन्द्रिय सुख नहीं मिले, तब तक इन्द्रिय सुख अच्छा लगता है। इन्द्रिय सुख रिलेटिव सुख है।

सच्चा सुख किसको बोला जाता है कि जो सनातन है। एक बार आया तो फिर कभी जाता ही नहीं। हम अभी आधि में हैं, व्याधि में हैं कि उपाधि में हैं?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहा जाता है कि संसारी आदमी आधि, व्याधि और उपाधि से घिरा हुआ है।

दादाश्री : हाँ, तो हम किस में हैं? आपको क्या लगता है? हम निरंतर समाधि में रहते हैं। कोई गाली दे तो भी हमारी समाधि नहीं जाती और कोई फूल चढ़ाये तो भी हमारी समाधि नहीं जाती। आपको तो फूल चढ़ायें, गाली दे तो समाधि चली जायेगी। आपको कोई पैर में गिरकर दर्शन करने आयेगा तो आप घबरा जाओगे। आप मान भी पचा नहीं सकते और अपमान भी पचा नहीं सकते। हमको तो मान मिले तो भी हरकत नहीं और अपमान मिले तो भी हरकत नहीं है। हमारे यहाँ वैल्युएशन का डिवेल्युएशन हो गया है। सब जगह अपमान की डिवेल्युएशन थी, तो हमने उसका वैल्युएशन कर दिया और मान की वेल्युएशन थी, उसका डिवेल्युएशन कर दिया। दोनों को नोर्मल कर दिया।

ऊर्ध्वगति के Laws !

प्रश्नकर्ता : जिंदगी में त्रास है और पीड़ा से परेशान हूँ, उसका कोई मार्ग चाहिये।

दादाश्री : परेशानी अच्छी नहीं लगती?

प्रश्नकर्ता : परेशानी से तो आदमी को अक्ल आती है, नहीं तो अक्ल कभी नहीं आये।

दादाश्री : हाँ, तो परेशानी आपके पास रखें। क्यूं फेंक देते हो? आपको परेशानी पसंद है? परेशानी मार्ग पर रहना या तो शांति मार्ग पर रहना। दो मार्ग हैं। शांति में परेशानी नहीं रहती। आपको कौन सा मार्ग पसंद है?

प्रश्नकर्ता : हमको तो शांति मार्ग ही पसंद है। लेकिन इस समय परेशानी है।

दादाश्री : हाँ, तो परेशानी का उपाय है। मगर फिर शांति का मार्ग अपने हाथ में आ जाता है। शांति मार्ग और परेशानी मार्ग, दोनों का मिक्स्चर मत करना। मिक्स्चर करोगे तो आपको फायदा नहीं मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : एक ही मार्ग शांति का रखुँगा।

दादाश्री : वह ठीक बात है।

प्रश्नकर्ता : मगर जो भलाई करता है, उसके पर ही ज्यादा परेशानियाँ, ज़्यादा दु:ख आता है। ऐसा क्यों?

दादाश्री : जो भलाई करता है, उधर परेशानी का फर्स्ट प्रिफरेंस है और जो चोर है, बदमाश है, उसके लिए परेशानी का प्रिफरेंस नहीं है।

कुदरत का काम कैसा है? कुदरत क्या बोलती है कि जो अधोगति में जानेवाला है, उसको हेल्प करो और जो ऊर्ध्वगति में जानेवाला है, उसको पकड़ा दो। चोर ने गुनाह किया है और अधोगति में जानेवाला है, इसलिए उसको कुदरत नहीं पकड़वा देती। स्ट्रेट फोरवार्ड (सीधे) आदमी को कुदरत पकड़वा देती है।

प्रश्नकर्ता : वह जो तकलीफ है, वह सिर्फ मेरे लिए सीमित रहे, लिमिटेड रहे तो ठीक है, लेकिन उससे मेरे बाल-बच्चे को, सबको परेशानी होती है, तो इसका यह तो मतलब नहीं कि कुदरत हम सबको ऊर्ध्वगति में ले जाना चाहती है?

दादाश्री : हाँ, सारा फैमिली (परिवार) ऊर्ध्वगति में जानेवाली है। ऊर्ध्वगति में जानेवाले को इस संसार में राग नहीं हो, ऐसी चीज मिलती है। उसको पसंद नहीं हो, ऐसा होता है। अधोगति में जानेवाले का मोह ज्यादा बढ़ता है और ऊर्ध्वगति में जानेवाले का मोह टूट जाता है। जैसे जिसका लड़का अच्छा हो, लड़की अच्छी हो, तो वह भगवान का नाम भूल जाता है।

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा नहीं है। अच्छे लड़के-लड़की वाले भी भगवान का नाम लेते हैं।

दादाश्री : मगर इसमें मोह ज्यादा बढ़ता है। 'यह हमारा लड़का ऐसा है, यह हमारी लड़की ऐसी है', ऐसा उसको मोह होता है। कुदरत का नियम क्या है कि जिसको ऊर्ध्वगति में ले जाने का है, उसको हेल्प करती है।

प्रश्नकर्ता : वह कैसे?

दादाश्री : राग न हो ऐसी चीज देती है कि जिससे यह संसार अच्छा नहीं है, ऐसी उसको बिलीफ हो जाती है। जिसको अधोगति में जाने का है, उसको तो इस संसार में इधर बहुत आनंद है कि मेरा लड़का भी अच्छा है, ये मकान भी अच्छा है, पैसा भी बहुत है।

प्रश्नकर्ता : हमारे पास के जो लोग हैं, उनका नया धंधा है, उनको कमाई बहुत है, घर अच्छा है, सब मज़े में हैं और हमारे पास अगर कोई आये, तो उनको बिठाने के लिए ठीक सा आसन तक नहीं है, तो हमको शर्म महसूस होती है।

दादाश्री : ऐसी कोई जरूरत नहीं। हमारा बड़ौदा में घर है, वहाँ हमारा बैठने का रूम १० x १२ का है। हम ठेकेदारी का धंधा करते हैं, बहुत बड़ा धंधा करते हैं लेकिन हमारे यहाँ सोफासेट भी नहीं है। कहाँ से लायें वह ? वह सच्चे पैसे से नहीं होता है। हमारी कंपनी बहुत कमाती है लेकिन घर में हम छह सौ-सात सौ रूपये ही देते हैं।

हमारे पास एक बड़े जज आये थे। उनकी पत्नी उसको क्या बोलती थी कि, 'तुम्हारे फ्रेन्ड सर्कल में सब ने बंगला बना लिया है और हमको भाड़े के मकान में रहना पड़ता है।' वह मुझ से पूछने लगे कि 'मेरी पत्नी ऐसा बोलती है, क्या करना चाहिये?' उनकी पत्नी बोलती है कि मकान क्यों नहीं बनाया? तो उसके मन में क्या आता है? 'रिश्वत तो लेनी चाहिये'। ऐसे बिलीफ बदलती है। उसके सभी फ्रेन्ड्स रिश्वत लेते थे मगर वो कभी रिश्वत नहीं लेता था। तो हमने कहा, 'तुम्हारी बिलीफ नहीं बदलनी चाहिये। यह तो एक्झजामिनेशन है।'

भगवान क्या कहते हैं, जो रिश्वत लेता है मगर कहता है, 'ऐसा नहीं करना चाहिये, ऐसा क्यों हो जाता है?' तो भगवान उसको छोड़ देते हैं। और जो रिश्वत नहीं लेता और कहता है, रिश्वत लेनी चाहिये, वह सच्चा गुनहगार है, वह पकड़ा जाता है। जो रिश्वत नहीं लेता लेकिन लेने का विचार किया वह कॉज़ेज़ हैं। फिर उसका इफेक्ट ऐसा आयेगा कि वह रिश्वत लेगा। जो रिश्वत लेता है मगर नहीं लेने का विचार है, ऐसे कॉज़ेज़ हैं, फिर इफेक्ट में वह रिश्वत लेगा ही नहीं।

सबने रिश्वत ली और मकान बना लिया और इसने रिश्वत नहीं ली। अभी वह सारी जिंदगी कितनी भी कोशिश करे तो भी वह नहीं ले सकेगा। मगर उसकी पत्नी ने क्या बोल दिया, 'तुम रिश्वत लेते नहीं, इसलिए हमारा मकान नहीं है'। तब उसकी बिलीफ बदल जायेगी कि रिश्वत लेनी चाहिये। यह कितनी जोखिमदारी है ? जोखिमदारी है, यह तो समझना चाहिये न? जिम्मेदारी क्या है, उसको मालूम नहीं है, ऐसी

ही कितनी जिम्मेदारीयाँ लेता है। You are whole and sole responsible for yourself. God is not responsible for your life। दूसरा कोई आदमी, आपकी पत्नी, आपका लड़का आपकी जिंदगी के लिए जिम्मेदार नहीं है। तो जो विचार करने हैं, वे अच्छे विचार करना। जो काम करने हैं, वे अच्छे काम करना, क्योंकि जिम्मेदारी आपकी है। फिर भगवान भी इसमें से छुड़ा नहीं सकते।

यह जन्म तो मनुष्य का मिला है मगर ऐसे विचार करोगे तो दूसरा जन्म मनुष्य का आयेगा या नहीं भी आयेगा। ऐसा है, पूर्वजन्म के संस्कार अच्छे हों तो आज इसको तकलीफ नहीं होगी, रिश्वत नहीं लेगा। और अभी संस्कार बिगाड़ दिये तो अगले जन्म में सब परेशानी हो जायेगी।

घर ऐसी कम्पनी है की उसमें सबका शेयर (हिस्सा) है, घर के सब मेम्बर (सदस्य) है, वे सब शेयरहोल्डर हैं। यह सब बोलते हैं कि, 'हमको यह मिलना चाहिये, यह मिलना चाहिये।' मगर सबको ऐसा नहीं मिलेगा। क्योंकि सबका शेयर है। कम्पनी एक ही है, मगर जिसका जितना शेयर है, उसको उतना ही मिलता है। ऐसे बात समझने की है।

प्रश्नकर्ता : ठीक से समझ में आ गया। अभी सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि हमको ये सब जो परेशानी है, उसको बर्दाश्त करने के वास्ते शक्ति प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिये?

दादाश्री : वह तो हम कर देंगे। ऐसा पाँच हजार लोगों को कर दिया है, फिर कभी कोई परेशानी ही न हो, ऐसा।

प्रश्नकर्ता : फिर भी मुझे बर्दाश्त करने के लिए कोई उपाय है?

दादाश्री : हाँ, उपाय तो बहुत हैं। जितने रोग हैं न, उतने उनके उपाय होते हैं, रिमेडी होती है। रिमेडी के बिना दुनियाँ है नहीं। वह सब कहते हैं कि हमें यह दु:ख है; यह दु:ख है, तो हमारे पास

आ जाते हैं, तो सबका दु:ख निकल जाता है। क्योंकि हम दु:खी कभी नहीं हुए। हमने दु:ख कभी देखा ही नहीं। हम मोक्ष में, निरंतर मुक्त भाव से रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : वह मैंने मान लिया कि मुझे कोई दु:ख नहीं होगा। लेकिन मेरा छह साल का बच्चा है, वह चल भी नहीं सकता, बोल भी नहीं सकता, बीमार ही रहता है, उसको बहुत परेशानियाँ है, अगर मैं अकेला रहूँ और बच्चा अकेला रहे तो मैं एडजस्ट करके चला लूँ। लेकिन बच्चे की माँ को क्यों भुगतना पड़ता है? यह मुझ से देखा नहीं जाता।

दादाश्री : नहीं, वह भी पार्टनर है न ? शेयरहोल्डर है न ? तुम्हारे अकेले का कर्म नहीं, सब शेयरहोल्डर हैं। जो ज्यादा भुगतता है, उसका शेयर ज्यादा है।

प्रश्नकर्ता : और ऐसा होने से भगवान पर जो फेथ (श्रद्धा) है, विश्वास है, वह भी कम होना शुरू हो जाता है।

दादाश्री : आपको भगवान पर श्रद्धा कम हो जाती है लेकिन भगवान इसमें कुछ करता ही नहीं। उसके ऊपर यह आक्षेप लगाते हैं कि 'भगवान ने हमारे लड़के को दु:ख दिया, ऐसा बना दिया, हमको ऐसा नुकसान किया।' भगवान ऐसा कुछ करता ही नहीं। भगवान तो भगवान ही हैं, संपूर्ण ऐश्वर्य के साथ हैं और आपके अंदर बैठा हुआ है। हम उसे देख सकते हैं।

The world is the puzzle itself ! God has not puzzled this world at all. Itself puzzled हो गया है और उसमें से पज़ल ही होता है। आपको नहीं, हरेक आदमी को पज़ल ही होता है। जो 'ज्ञानी' हैं, उसको पज़ल नहीं होता और हमने जिसको ज्ञान दिया है, उसको पज़ल नहीं होता, क्योंकि वे ज्ञान में ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : हमारे जीवन में ऐसा प्रसंग भगवान क्यों लाये? यह हमारी समझ में नहीं आता।

दादाश्री : इस दुनियाँ में सभी प्रकार के लोग हैं, मगर तुम्हारे राग-द्वेष जहाँ पर हैं, उसके साथ तुम्हारा संबंध होता है। अच्छे आदमी के साथ राग करते हो, तो उसके साथ संबंध होता है और बुरे आदमी के साथ द्वेष करते हो, तो उसके साथ भी संबंध हो जाता है। द्वेष किया तो भी वह आपके यहाँ आयेगा और राग किया तो भी वह आपके यहाँ आयेगा। उस बच्चे के लिए पूर्वजन्म में आपने क्या किया था ? दूसरे सब लोगों से उस बच्चे को परेशानी आ गयी, तब आपकी उससे कुछ पहचान नहीं थी, फिर भी वह प्रोटेक्शन के लिए आया तो आपने क्या बोला कि 'हमारी पूरी जिंदगी जायेगी फिर भी उसको हम बचायेगें'। वह हिसाब जोइंट हो गया। दूसरा कुछ नहीं, ऐसे संबंध में आ गये।

प्रश्नकर्ता : यह फर्ज जो हम बजाते हैं, उसके लिए सिर्फ शक्ति चाहते हैं, और कुछ नहीं।

दादाश्री : हाँ, सही है, वो शक्ति तो माँगनी ही चाहिये। क्यों कि फर्ज बजानी ही चाहिये। अपने इंडियन (भारतीय) संस्कार हैं, ऐसे छोड़ देने का नहीं। आपने पकड़ लिया, हाथ दिया, फिर छोड़ने का नहीं। औरत को डिवोर्स (तल्लाक) भी नहीं दे सकते हैं, क्योंकि अपना इंडियन कल्चर (भारतीय संस्कार) है न?

प्रश्नकर्ता : जब प्रेरणा हो गयी आपके पास आने के लिए, तो कोई अच्छी चीज़ होने वाली है।

दादाश्री : हम तो निमित्त हैं, हम किसी चीज़ के कर्ता नहीं हैं। मगर हमारा यह यशनाम कर्म है कि जिसको अच्छा होने का योग हो तो वह फिर हमारे पास आ जाता है, ऐसा हमारा यश है। हम कुछ करते नहीं, यश ही सब काम करता है।

कुदरत की व्यवस्था का प्रमाण !

प्रश्नकर्ता : आज तो दुनियाँ में हर जीव दुःखी है। हम इससे

छुटकारा कैसे पायें ?

दादाश्री : 'ज्ञानी' मिलें तो दुःख से छुटकारा हो जाये।

प्रश्नकर्ता : सबको तो ज्ञानी मिल नहीं सकते, तो सब सुखी कैसे हो सकते हैं?

दादाश्री : नहीं, नहीं, सबके लिए सुख नहीं है। यह कलयुग है, दूषमकाल है। भगवान ने कहा था कि दुषमकाल में सुख की इच्छा ही मत करो, उसको मांगो ही मत। ऐसा बोलना कि भगवान, कुछ दुःख कम करो। सुख तो 'ज्ञानी पुरुष' हो, तो ही सुख हो सकता है। नहीं तो इसमें सुख नहीं है। समकिती आदमी के पास बैठो तो सुख आयेगा। मिथ्यात्वी के पास से सुख नहीं आयेगा।

प्रश्नकर्ता : फोरेन में लोग दुःखी हैं, पर उनसे भी ज्यादा दुःखी यहाँ हैं।

दादाश्री : वह बात ठीक है। यहाँ के लोगों को ज्यादा चिंता-वरीज़ है, क्योंकि यहाँ विकल्पी लोग हैं और वे लोग सहज हैं। सहज याने बालक के जैसे और इधर बड़े बुजुर्ग (उमरवाले) जैसे हैं। बड़ी उमरवाले को ज्यादा दुःख रहता है।

प्रश्नकर्ता : अपने भारत में बहुत से लोगों को खाना भी पूरा नहीं मिलता।

दादाश्री : कौन बोलता है कि खाना भी नहीं मिलता ? यह सब गलत बात है। खाना न मिलने के कारण कोई आदमी मरा नहीं।

प्रश्नकर्ता : अभी गरीबी है वह सही है ?

दादाश्री : वह गरीबी नहीं है, जो है वह सही है। कुदरत ने बिलकुल करेक्ट रखा है। कौन गरीब है? आपको गरीबी किसने बतायी ? गरीब कहाँ देखा आपने? और हमको बताओ कि कौन गरीब नहीं है? इस बड़ौदा शहर में कौन गरीब नहीं है? गरीब की

डेफिनेशन ऐसी नहीं है। आप आँख से देखते हैं वह गरीब हैं, ऐसा मान लिया, यह ठीक नहीं है। अमुक जातवालों को खाने का ही मिलना चाहिये, उनके पास नगद रकम तो होनी ही नहीं चाहिये। यह कुदरत का ही खेल है। कुदरत ने ही ऐसा हिन्दुस्तान के लिए रखा है, बाहर के लिए कुछ भी हो। कुदरत ने जो हिन्दुस्तान के लिए किया है, वह सही है।

'ज्ञानी' मिले तो क्या लोगे ?

दादाश्री : किस लिए धंधा करते हो ? किस लिए पैसा बचाते हो ? वह सब कभी सोचा है ?

प्रश्नकर्ता : वह तो जिंदगी का एक भाग है।

दादाश्री : हाँ, मगर पैसे बचाकर क्या करने का? वे सब लोग तो चले जाते हैं न? लास्ट स्टेशन जाते हैं न? तो वे साथ में ले जाते हैं?

प्रश्नकर्ता : यहाँ अपनी आवश्यकता पूरी करने के लिए, शांति से जीने के लिए।

दादाश्री : हाँ, मगर उसका फायदा क्या ? पैसा कमाना जरुरी है, यह तो हम भी स्वीकार करते हैं मगर किस हेतु के लिए है ? खाने-पीने के लिए ? शांति के लिए ? तो शांति किस लिए ? क्या फायदा ? कोई बुजुर्ग आदमी को पूछा नहीं?

प्रश्नकर्ता : तो आप बताइये।

दादाश्री : 'ज्ञानी पुरुष' मिलें तो उनके पास अपना 'सेल्फ रियलाजेशन' हो जाये, तो फिर अपने को परमानेन्ट मुक्ति मिल जाती है। इस संसार से मुक्ति मिल जाती है। और 'ज्ञानी पुरुष' नहीं मिले तब तक क्या करने का ? दूसरे सब लोगों को, कुछ न कुछ सुख देने का। इससे अपने को अगले जन्म में सुख मिलेगा। अच्छा ही काम करने का, तो इससे अपने को अच्छा मिलेगा।

'ज्ञानी पुरुष' मिले तो 'मैं कौन हूँ' यह समझ लेना है। फिर कभी चिंता नहीं होगी। क्रोध-मान-माया-लोभ सब चले जायेंगे और आपको परमानेन्ट शांति रहेगी।

प्रश्नकर्ता : पुण्य क्या चीज है?

दादाश्री : आपके पास बैंक में क्रेडिट है, तो आप जब भी चाहें तब पचास रुपये, सौ रुपये किसी को दे सकते हैं और जिसके पास क्रेडिट नहीं है वह क्या करेगा? पुण्य याने आपकी मर्ज़ी के मुताबिक और पाप याने आपकी मर्ज़ी के खिलाफ।

वे मजदूर लोग सारा दिन बहुत मेहनत करते हैं लेकिन उनको ज्यादा पैसे नहीं मिलता हैं। पैसा मजदूरी से नहीं मिलता है, वह पुण्य का फल है। पिछले भव में जो तुमने पुण्य किया है, उसके फल स्वरुप यह है। इस संसार में खाना-पीना मिला, पैसा मिला, यह सब पाप और पुण्य का फल है और हमें जाना कहाँ है? मोक्ष में। तो मोक्ष में जाने के लिए पुरुषार्थ होना चाहिये। पैसा आदि सब चीजें तो आपको ऐसे ही मिलेंगी। अपने को तो काम करने का है सारा दिन। मगर मोक्ष में जाने के लिए तो बात अलग है।

व्यापार में धर्म रखा ?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, हमारा धंधा ऐसा है कि उसमें झूठ और छल-कपट करना पड़ता है, हमको वह पसंद नहीं है, फिर भी करना पड़ता है, तो इसके लिए क्या करना ? धंधा छोड़ देना ?

दादाश्री : धंधा ऐसे ही चालू रखना। अंदर बैठा है, वही भगवान सब सुनते है। अभी दूसरा बाहर वाला भगवान किसी की सुनता नहीं। क्योंकि बाहर वाले को तो बहुत फोन आते हैं तो किसी की बात सुनता ही नहीं। इसलिए आप अंदर वाले को फोन करना। उनका नाम क्या है? 'दादा भगवान' है। रोज सुबह में पाँच दफे बोलना कि, 'हे दादा

भगवान, हमें यह ऐसा बुरा धंधा अच्छा नहीं लगता। अभी परेशानी ऐसी आ गयी है और समाज भी ऐसा हो गया है मगर हमें बहुत बुरा लगता है। हम इसके लिए माफी माँगते हैं, फिर ऐसा कभी नहीं करेंगे।' इतना बोलने से कोई अड़चन नहीं आयेगी। धंधे में तो तुम्हारे सब हरीफ़ हैं, उन हरीफ़ के साथ चलना ही पड़ता है न? मगर ऐसे रोज़ माफी माँगना। तो तुम्हारी जोखिमदारी नहीं। बाद में तीन-चार साल में तुम्हारे हाथ से धंधे में बिलकुल कपट नहीं होगा।

व्यापार तो ऐसी चीज है कि दो साल अच्छा भी जातें हैं और दो साल बुरे भी जाते हैं। व्यापार के दो ही किनारे हैं, मुनाफा और घाटा। एलिवेट भी होता है और कभी डिप्रेस भी होता है। मगर खुद को रीयलाइज हो गया तो अंदर शांति हो जायेगी। वह शांति बढ़ती बढ़ती फिर बिल्कुल समाधि ही रहेगी, सदा के लिए। फिर डिप्रेस नहीं होगा।

अपनी सेफसाइड के लिए धर्म समझना चाहिये। दुनिया में दो चीजें काम करती हैं, पाप और पुण्य। जब पुण्य प्रगट होता है तो अच्छी जगह मिलती है, सब जगह में अच्छा खाना-पीना मिलता है, सब संयोग अच्छे अच्छे मिलते हैं। जब पाप प्रगट होता है, तो सब संयोग बुरे हो जाते हैं। उस समय क्या करने का? सेफसाइड कैसे रहेगी? ऐसी सेफसाइड के लिए धर्म समझना चाहिये।

अन्डरहैन्ड के अन्डरहैन्ड बन सकोगे ?

धर्म क्या है? वह रिलेटीव है। वह भौतिक सुख के लिए है। इससे आदमी आगे जाता (बढ़ता) है, मगर यही पूरी सच्ची बात नहीं है। सच्ची बात तो यही है कि जागृति पूरी होनी चाहिये। जागृतिपूर्वक आगे जाना चाहिये। जागृति के लिए ही हिन्दुस्तान में मनुष्य का जन्म है। यह तो लोग नींद में रहते हैं और हर रोज औरत के साथ झगड़ते हैं, बोस के साथ झगड़ते हैं, अन्डरहैन्ड के साथ झगड़ते हैं। आप कभी अन्डरहैन्ड के साथ झगड़ते हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, होता है कभी।

दादाश्री : जो अपना अन्डरहैन्ड है, उसकी तो रक्षा करनी चाहिये। जिसकी रक्षा करने की है, उसके साथ ही लड़ते हैं, तो उसे जागृत कैसे बोला जायेगा?

प्रश्नकर्ता : वह तो नींद में है, उसको जागृत करने के लिए हम लड़ते हैं।

दादाश्री : अरे, उसके साथ लड़ते हैं, वही अजागृति है। वह तो अपनी निर्बलता है। जो छोटे आदमी को दंड देता है, अपने अन्डरहैन्ड को दंड देता है, वह तो उसकी निर्बलता है। बॉस को क्यों दंड नहीं देते हो? बॉस जब भी बोलते हैं, तब सुन लेते हो। यह क्या तरीक़ा है? बॉस को भी दंड दो, उसको भी जागृत करो न! उसको बोलो कि 'तुम तुम्हारी औरत के साथ लड़कर आये हो और इधर गुस्से में हमें क्यों सताते हो?!' ऐसा स्पष्ट बोलो!! लेकिन अन्डरहैन्ड को ही सब सताते हैं, यह जागृत की निशानी नहीं और इसमें सारा दिन बंधन ही हो रहा है, यह भी मालूम नहीं है। इसमें फिर आदमी जानवर में जायेगा, यह भी मालूम नहीं उसको। क्योंकि वह पशु होने का कॉज़ चार्ज करता है, तो इफेक्ट पशु का हो जायेगा। कोज़ मनुष्य का करे तो मनुष्य होता है, देव का कॉज़ करे तो देवलोक में जाता है, नर्क का कॉज़ करे तो नर्कगति में जाता है। जैसा कॉज़ करता है, वैसा इफेक्ट होता है। आपने कभी पाशवता का कोज़ किया था? अपने अन्डरहैन्ड को जो बोलता हैं और उसके साथ गुस्सा करते हैं, वह बिलकुल पाशवता है। अन्डरहैन्ड की तो रक्षा करनी चाहिये। वह हमें बड़ा मानता है, वह हम से तो बेचारा छोटा है, इसलिए उसकी रक्षा करनी चाहिये।

आपका बॉस है कि नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, बॉस है न।

दादाश्री : कभी गुस्सा करता है? बॉस का उसकी औरत के साथ कभी झगड़ा हो गया तो इधर ओफिस में आकर उसका क्रोध हम पर निकालता है। देखो, ऐसी बात है। तो हम आपको ऐसी प्रोटेक्शन दे देंगे कि आपको कुछ दुःख होगा ही नहीं। फिर ओफिस में बैठकर भी समाधि रहेगी, बॉस गाली दे तो भी समाधि नहीं जायेगी। यह ज्ञान मिल जायेगा तो फिर तुम्हारा कोई बॉस ही नहीं रहेगा। वह 'रवीन्द्र' का बॉस रहेगा, तुम्हारा खुद का बॉस नहीं। तुम 'खुद' और 'रवीन्द्र' दोनों अलग हो जाओगे और अलग ही काम चलेगा सब। फिर औरत के साथ रह सकते हो, लडके की शादी भी करा सकते हो और सिनेमा देखने को भी जा सकते हो। व्यवहार सब कुछ कर सकते हो। कुछ भी त्यागने की जरूरत नहीं। इधर त्याग तो अहंकार और ममत्व का हो जाता है, फिर त्याग करने की कोई जरूरत ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में रहकर भी अलिप्त रहना चाहिये।

दादाश्री : हाँ, ऐसा अलिप्त हो जाता है।

हिन्दुस्तान में लोगों को सच्चा मार्ग नहीं मिला। इसलिए सब मोह में डूब गये। इधर मार्ग नहीं मिलने से लोग उधर चले जाते हैं। सच्चा मार्ग मिले तो हिन्दुस्तान के लोग एक घंटे में भगवान हो सकते हैं। भगवान किसको बोला जाता है? आदमी धंधेवाला हो या कुछ भी करता हो, मगर जिस आदमी को 'कुढ़न-बेचैनी' नहीं होती, उसे भगवान बोला जाता है। 'कढापा-बेचैनी' (कुढ़न-बेचैनी) तुम्हारी समझ में आता है? 'कुढ़न-बेचैनी' याने आपको मैं समझाता हूँ।

तुम्हारे यहाँ कोई मेहमान बैठे हैं और नौकर चाय के दस कप ट्रे में लेकर आया और कहीं टक्कर लगी, तो उसके हाथ में से ट्रे गिर गयी तो आपको अंदर कुछ होता है?

प्रश्नकर्ता : मेरी चीज है तो इफेक्ट होता है। पड़ौसी की होगी तो मुझे कुछ नहीं होगा।

दादाश्री : आपकी चीज हो और आप विचारशील हों, तो आप मुँह से कुछ नहीं बोलेंगे, क्योंकि आप सोचते हैं कि सब लोगों के सामने मैं नौकर के साथ लडूँगा तो सबके सामने मेरी इज़्ज़त चली जायेगी। इसलिए मुँह से कुछ नहीं बोलते, मगर अंदर बोलते हैं कि सब लोग जायेंगे फिर नौकर को मारूँगा। मन में जो इफेक्ट होता है, उसको 'बेचैनी' बोला जाता है और मुँह से लड़ने लगा तो उसको 'कुढ़न' बोला जाता है। किसी को दु:ख हो ऐसी स्पीच नहीं होनी चाहिये।

वर्तमान में रहोगे कैसे ?

गोवा से खंभात आये तो थकान नहीं लगी ? टायर्ड नहीं हो गये?

प्रश्नकर्ता : नहीं, आपके पास आने पर सारी थकान चली गयी।

दादाश्री : हाँ, मगर थकान लगी थी न? क्योंकि आप क्या बोलते हैं कि मैं गोवा से खंभात आया। सच में तो गाड़ी इधर आई है, मगर आप बोलते हैं कि मैं आया। लेकिन आप तो गाड़ी में सीट पर बैठे थे। आपकी समझ में ऐसा आये कि मैं नहीं आया, मुझे गाड़ी लेकर आयी। फिर साइकोलोजीकल इफेक्ट ऐसा हो जायेगा, तो थकान नहीं लगेगी।

हम बम्बई से गाड़ी में बैठते हैं और गाड़ी बड़ौदा आती है, तो हम देखते हैं कि सब लोग ऐसा बोलते हैं कि 'बड़ौदा आया, बड़ौदा आया'। तो हम उतर जाते हैं, बस। बम्बई से हम नहीं आये, यह गाड़ी ले आयी। और जो बम्बई से आया वह घर पहुँचते ही क्या बोलता है कि 'अरे, अभी चाय रख दे, जल्दी चाय रख दे, मैं थक गया हूँ।' अरे, तू तो गाड़ी में बैठकर आया था, तो फिर कैसे बोलता है कि मैं थक गया ?

प्रश्नकर्ता : This is real science !

दादाश्री : हाँ, मैं तो ऐसे ही करता हूँ। हमें जब 'ज्ञान' नहीं हुआ था, तब हम बम्बई से बड़ौदा आते थे, तो सब लोग हमको स्टेशन

पर छोड़ने आते थे। गाड़ी रवाना हुई तो सब लोग चले जाते थे, तो 'मैं' इस 'ए.एम.पटेल' को क्या बोलता था कि कोन्ट्रैक्टर साब, बम्बई छूट गया और अभी बड़ौदा नहीं आया। गाड़ी ने व्हिसल मार दी तो बम्बई बिलकुल छूट गया, बड़ौदा अभी नहीं आया तो हम अभी मोक्ष में ही हैं। बम्बई से छूट गया, बड़ौदा से बंधन नहीं हुआ, तो अभी मुक्त हो गये, मोक्ष में ही हैं। देखो न, सोते सोते मोक्ष में रहने का!

अंतर सुख-बाह्य सुख का बैलेन्स !

भौतिक सुख तो सब अपने हिसाब का लेकर आये हैं, वही भुगतने का है। मगर आंतरिक सुख की जरा भी कमी पड़े तो आनंद नहीं आता। भौतिक सुख के साथ अंतर सुख भी होना चाहिये।

भगवान ने क्या कहा था कि अंतर सुख और बाह्य सुख, दोनों सुख साथ होने चाहिये। उसमें अगर भौतिक सुख ज्यादा बढ़ गया तो आंतरिक सुख कम हो जायेगा। आंतरिक सुख कम हो गया तो आदमी के दिमाग की खराबी हो जायेगी। यह भौतिक सुख थोड़ा कम हो तो चलेगा मगर आंतरिक सुख तो होना ही चाहिये। आंतरिक सुख होगा तो ही भौतिक सुख का मज़ा आयेगा। आंतरिक सुख नहीं होगा तो भौतिक सुख 'पोइज़न' जैसा हो जायेगा। भौतिक सुख ज्यादा बढ़ गया तो फिर बाद में ब्रान्डी है, जुआ है, ऐसे दुराचार में चला जायेगा। नहीं तो मनुष्य को अंतर सुख तो बहुत है, बाहर के किसी भी सुख की जरूरत ही नहीं रहे, इतना अंतर में सुख है। 'नेसेसिटी' की इच्छा भी करने जैसी नहीं है। वह अंतर सुख यदि मिल गया, तो काम हो गया।

अभी जो लोग आंतरिक सुख के लिए खुद ही प्रयत्न करते हैं, वह कैसी बात है, कि डॉक्टरी के पुस्तक में देखकर खुद ही प्रेस्क्रिप्शन बना लें तो चलेगा ? उससे पूरा फायदा नहीं मिलता। मगर डॉक्टर के पास जायें तो फिर पूरा फायदा है। वह डॉक्टर कैसा होना चाहिये कि बगैर फी का होना चाहिये। जहाँ फी है, वहाँ सच्ची दवा नहीं है। जहाँ

फी नहीं होती, वहाँ सच्ची दवा है।

प्रश्नकर्ता : फोरेन कंट्रीज़ में बहुत से लोग दारू, चरस, गांजा लेते हैं आनंद के लिए, मौज करने के लिए और कहते हैं कि दूसरी दुनिया में जा सकते हैं। तो यह दूसरी दुनिया क्या है? वह जानना है।

दादाश्री : दूसरी दुनिया जैसी कोई चीज़ ही नहीं है। वह जो नशा करते है, उससे अंदर जो संवेदन होता है, वह बिलकुल डार्कनेस हो जाता है। उसमें उसको आनंद दिखता है। उसको वह सेकन्ड वर्ल्ड (दूसरी दुनिया) का आनंद बोलता है।

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसा लगता है कि सेकन्ड वर्ल्ड जैसा कुछ होना चाहिये, क्योंकि पाँच-छह महिने का छोटा बच्चा होता है, वह रोता है, हँसता है, उसे फीलिंग्स है, वह सेकन्ड वर्ल्ड को देखकर ही होनी चाहिये या मनुष्य मृत्यु के बाद सेकन्ड वर्ल्ड में जाता होगा ऐसा लगता है।

दादाश्री : सेकन्ड वर्ल्ड जैसी कोई चीज ही नहीं। हम ज्ञान में सब देखकर बोलते हैं। यह वर्ल्ड क्या है, उसका क्रियेटर कौन है, किसने यह सब बनाया, किस तरह से यह चलता है, ये सब कुछ हम देखकर बोलते हैं। किसी किताब में पढ़कर नहीं बोलते हैं। आपको वह सेकन्ड वर्ल्ड देखने में इन्टरेस्ट है और आपकी बिलीफ में यह फर्स्ट वर्ल्ड है, मगर ऐसा नहीं है।

फूल डार्कनेस में क्या होता है? गांजा-चरस जैसी कोई भी चीज से वह फूल डार्कनेस में चला जाता है, वहाँ बिलकुल इफेक्ट नहीं होता, अंदर कोई इफेक्ट नहीं होता है। वह जो दूसरी दुनिया की आपकी बिलीफ है, वह वर्ल्ड ओफ डार्कनेस है। वह गांजा-चरस पीकर ये दूसरी दुनिया में चला जाता है। आदमी को इतना थोड़ा भी उजाला दिखाया कि अंदर बेचैनी चालू हो जाती है, क्योंकि लाइट इफेक्टिव है न? लाइट इज़ इफेक्टिव। जब फूल लाइट हो जाती है तो अनइफेक्टिव हो जाता है और फूल डार्कनेस हो गयी तो अनइफेक्टिव

हो जाता है। फिर फूल डार्कनेस में दुःख मालुम नहीं होता है, उसको ही वह आनंद मानता है।

सारी दुनिया में हम अकेले आदमी अबुध हैं। हमारे पास बुद्धि नहीं है। हमारे पास इनडाइरेक्ट लाइट नहीं है। हमारे पास डाइरेक्ट लाइट है, फूल लाइट है, तब फूल समाधि हो जाती है। बुद्धि से समाधि नहीं रहती है। तो वह ब्रांडी, गांजा कुछ पीता है तो भी वह अबुध हो जाता है, तब भी समाधि होती है। मगर वह डार्कनेस की समाधि है। बुद्धि की लाइट आदमी को इमोशनल करती है। तो बात समझ गये न? लाइट इज़ इफेक्टिव ! फूल लाइट इज़ अनइफेक्टिव और फूल डार्कनेस इज़ अनइफेक्टिव।

'ज्ञानी पुरुष' के पास सब बातें सायन्टिफिक होती हैं। हम मोटर में भी घूमते हैं फिर भी निरंतर समाधि में रहते हैं। हम बिलकुल फूल लाइट की दुनिया में ही रहते हैं। वह चरस-गांजा पीकर फूल डार्कनेस की दुनिया में चला जाता है। दूसरी दुनिया एंड वाली है और सच्ची दुनिया है, वह एंडलेस है।

प्रश्नकर्ता : जिसकी जरूरत है, वह चीज क्यों नहीं मिलती?

दादाश्री : आप अगर नोर्मालिटी में रहें तो जिस चीज की आपको जरूरत है वो चीज़ घंटे, दो घंटे, तीन घंटे में आप जहाँ बैठे हैं, वहाँ हाजिर हो जायेगी। भगवान अंदर बैठे हैं। मगर मनुष्य नोर्मालिटी में नहीं रहता। लोग लोभ करने को गये, एबोव नोर्मल लोभ करने को गये, उसको भगवान क्या कहते हैं, 'अब हमारी शक्ति तुमको नहीं मिलेगी। अब अपनी शक्ति से जाओ, खुद की जिम्मेदारी पर जाओ। हम आपको लाइट देंगे।' लाइट के बिना चलता ही नहीं न ?! भगवान लाइट देने को तैयार हैं मगर जिम्मेदारी नहीं लेते। खुद की शक्ति से जाओ। भगवान को आप प्रार्थना करेंगे कि हे भगवान! हमको हेल्प करो, तो भगवान आपको जरूर हेल्प करते हैं। वे प्रकाश ही देने का काम करते हैं, दूसरा कुछ नहीं।

मनुष्य चिंता मुक्त हो सकता है?

दादाश्री : कभी चिंता होती है क्या ?

प्रश्नकर्ता : होती है।

दादाश्री : तो क्या मेडिसिन (दवाई) ली आपने ?

प्रश्नकर्ता : चिंता की तो मेडिसिन ही नहीं है।

दादाश्री : मगर मेन्टल वरीज़ तो उस डॉक्टर को भी रहती है न? सबको ही मेन्टल वरीज़ रहती है। हमको मेन्टल वरीज़ कभी नहीं होती है। आपको वरीज़ निकालने की है? कभी वरीज़ न हो ऐसा करने का है?

आप रात को नींद में किधर चले जाते हैं ?

प्रश्नकर्ता : वह नहीं मालूम।

दादाश्री : अगर नींद चली ना जाये, नींद परमानेन्ट हो जाये तो आपकी क्या स्थिति हो जाती है ?

प्रश्नकर्ता : तो दूसरे लोग उसको डैड (मृत्यु) कहेंगे।

दादाश्री : सोते समय कभी चिंता होती है कि सबेरे नहीं उठ सका तो मैं क्या करूँगा ?

प्रश्नकर्ता : नहीं, उसकी चिंता तो नहीं रहती।

दादाश्री : अगर इतनी चिंता हो जाये तो कल्याण हो जाये!

प्रश्नकर्ता : परमात्मा के साक्षात्कार के लिए क्या विधि है?

दादाश्री : क्या नाम है आपका ?

प्रश्नकर्ता : रवीन्द्र।

दादाश्री : क्या आप रियली स्पीकिंग रवीन्द्र हैं? सचमुच आप कौन हैं? रवीन्द्र तो आपका नाम है, पहचान करने के लिए। आप खुद कौन हैं?

प्रश्नकर्ता : वह तो जैसे सब आत्मा है, वैसे मैं भी एक आत्मा हूँ।

दादाश्री : हाँ, उस आत्मा की पहचान होनी चाहिये। आत्मा की पहचान हो गयी, फिर रवीन्द्र तो टेम्पररी एडजस्टमेन्ट है। वह पहचान हम करा देते हैं। फिर परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है। फिर कभी चिंता-वरीज़ कुछ नहीं होती है और एक-दो जन्म के बाद मोक्ष में चला जाता है।

इस दफा बोम्बे में जन्म लिया है, तो उसके पहले किधर जन्म लिया था? मालूम नहीं? और अगले जन्म में किधर जन्म लोगे यह भी मालूम नहीं। और अभी किधर जाने का है यह भी मालूम नहीं। ऐसा कैसे चलेगा?

कभी चिंता होती है? दवाई नहीं करते हैं? बिना दवाई ऐसे ही आराम हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : आराम है ही कहाँ?

दादाश्री : किसी जगह पर आराम नहीं है? वह आराम हराम हो गया है? एक दिन भी चिंता बंद नहीं होती? दिवाली के दिन तो बंद रहती है कि नहीं?

प्रश्नकर्ता : दिवाली में तो चिंता बढ़ती है।

दादाश्री : दिवाली के दिन चिंता ज्यादा बढ़ती है? उस दिन तो खाना-पीना अच्छा मिलता है, कपड़े अच्छे मिलते हैं, फिर भी?

प्रश्नकर्ता : खाने-पीने के लिए तो हम महसूस ही नहीं करते।

दादाश्री : हाँ, मगर वह चिंता तो बढ़ती है। ऐसा कब तक चलेगा? कितना स्टौक है? अभी खतम नहीं हुआ?! सारे दिन में चिंता नहीं हो, ऐसा एक दिन भी मिले तो कितना आनंद हो जाता है न! लेकिन एक दिन भी ऐसा नहीं मिलता है। तुम्हारे यहाँ सभी लोगों को ऐसा रहता है?

प्रश्नकर्ता : सबका क्या पता?

दादाश्री : कितने लोग आनंद में रहते हैं, उसकी तलाश नहीं की? आप अकेले को ही नहीं, सारी दुनिया में सभी लोगों को चिंता है। सभी लोगों को आधि-व्याधि-उपाधि, वरीज़ !! और पूछेंगे कि 'क्यों भाई, कैसा है?' तब वह बोलता है कि, 'बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है।' मगर यह सब झूठी बातें हैं। ऐसा नहीं बोले, तो उसकी आबरू चली जाये। इसलिए आबरू रखने के लिए ऐसा बोलते हैं कि, कुछ परेशानी नहीं और खुद जानते हैं कि कितनी परेशानियाँ हैं। परेशानी कोई बता देता है? परेशानी गुप्त ही रखते हैं, वह भगवान ने 'कीमिया' कैसा अच्छा किया है(!) कि कोई परेशानी ही नहीं बताये। और औरत के साथ घर में झगड़ा होता है, तो वह थोड़े रोकर बाहर निकलता है ? तब तो मुँह धोकर बाहर निकलता है। ऐसे दुनिया चल रही है।

ऐसा है, सच्ची बात जानने की है। वह सच्ची बात जानने को नहीं मिली लोगों को और जो लौकिक बात है वही बात सब लोग जानते हैं। अलौकिक बात क्या चीज है, कभी सुनी भी नहीं, पढ़ी भी नहीं और हमने बताया ऐसे जानी भी नहीं। अलौकिक बात जाने तो सब परेशानियाँ चली जाती हैं। इधर अलौकिक बात जानने को मिलती है। सेल्फ का रियलाइजेशन हो सकता है, फिर चिंता कभी नहीं होती और बिझनेस भी आप कर सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : मानो या न मानो, मगर सबको वरीज़ तो रहती ही हैं।

दादाश्री : क्यों रहती हैं? आपने खुद को पहचाना नहीं और आप

बोलते हैं, 'मैं रवीन्द्र हूँ'। ऐसा इगोइज़्म (अहंकार) करते हैं। 'ये सब मैं चलाता हूँ' ऐसा भी इगोइज़्म करते हैं। और इससे वरीज़ ही रहती है। जो इगोइज़्म नहीं करता, उसको कुछ वरीज़ नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : जिसको चिंता नहीं होती, वो तो भगवान ही हो गया।

दादाश्री : हमारे साथ वाले जो लोग हैं, उनको कभी एक भी चिंता ही नहीं होती। वरीज़ हैं नहीं बिलकुल। और जेब काट ले तो भी चिंता नहीं। यह बात मानने में आती है? क्या इस वर्ल्ड में बिना वरीज़ कोई आदमी कभी होता है? कभी चिंता नहीं हो ऐसा ज्ञान है, ऐसी अपनी इंडियन फिलोसोफी है। जेब काट ले तो भी कुछ होता नहीं, गाली दे गया तो भी कुछ होता नहीं, नो डिप्रेशन, फूल चढ़ाये तो एलिवेशन नहीं, ऐसा अनइफेक्टिव हो जाता है (ज्ञान से)।

प्रश्नकर्ता : यह स्टेज कब आती है?

दादाश्री : वो स्टेज हम सिर पर हाथ रख कर कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : चिंता का कारण क्या है?

दादाश्री : चिंता का कारण इगोइज़्म है। अपनी बिलीफ में ऐसा है कि 'मैं ही चलाता हूँ' ऐसा इगोइज़्म है, इससे चिंता होती है। कौन चलाता है, वह मालूम हो जाये तो इसकी वरीज़ नहीं होगी। लेकिन सच मालूम होना चाहिये। लेकिन वह तो शंका है। इसलिए पल में बोलता है, भगवान चलाते हैं। थोड़ी देर में बोलता है, 'मैं चलाता हूँ'। फिर बोलता है, 'मी काय करूं (मैं क्या करूं)।' इसको शंका है। इस वर्ल्ड को भगवान चलाते ही नहीं और आप भी चलाते नहीं हैं। भगवान तो कुछ कर सकते ही नहीं। वो दूसरी शक्ति है, वही सब चलाती है। ये बात नहीं जानते इसलिए मन में ऐसा होता है कि मैं ही चलाता हूँ और इससे वरीज़ होती है, चिंता हो जाती है। चिंता इगोइज़्म है एक प्रकार का।

चिंता किस लिए करते हो? कोई भी जानवर चिंता नहीं करता,

तुम क्यों चिंता करते हो? सबको जो जरूरी चीजें हैं, वे मिल जाती हैं और आपको भी मिल जाती हैं। फिर ज्यादा मिले ऐसी आशा रखते हो, वह गलत है। स्वार्थ के लिए बहुत आशा रखते हो, वही दु:ख है। नहीं तो देह के लिए सब चीजें ऐसे ही मिल जाती हैं।

दो मिल वाला सेठ होता है, तो उसको एक पल भी शांति नहीं रहती। वह तीसरी मिल बनाने के लिये तैयारी करता है। उसको खाने के लिए भी टाइम नहीं। एक सेठ ने तीसरी मिल बनायी थी, डिनर के लिए हमें बुलाया था। हम साथ में खाने बैठे थे और उनकी वाइफ सामने आकर बैठी। तो सेठ ने बोला कि 'क्यूं इधर आयी?' तो वो बोली कि 'आज आप ज्ञानी पुरुष के साथ बैठे हैं, तो आज तो आराम से खाना खाइए।' तो मैं समझ गया कि आराम से कभी वह खाता नहीं। फिर सेठानी हमें बोली कि 'हम खाना टेबल पर रख देते हैं, पर रखने के पहले ही सेठ मिल में पहुँच जाते हैं और फिर बॉडी (शरीर) ही इधर खाती है।' फिर मैंने बोल दिया कि, 'सेठ, आप खाना खाने के टाइम चित्त को एबसेंट (गेरहाजिर) मत रखो। चित्त को प्रेजेन्ट (हाजिर) रखें। नहीं तो आपको ब्लड प्रेसर हो जायेगा और हार्ट एटेक भी हो जायेगा!! कैसी जिम्मेदारी आप लेते हैं? किसके लिए यह करते हैं? कितना लोभ है आपको? आप आराम से खायें।'

कृष्ण भगवान क्या कहते हैं कि प्राप्त को भुगतो, अप्राप्त की चिंता मत करो। अपने पास है वह आराम से खाओ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन चिंता-वरीज़ ये सब क्या है?

दादाश्री : चिंता-वरीज़ वे सब इगोइज़्म है।

प्रश्नकर्ता : तो What is egoism ?

दादाश्री : आप जो हैं, वह जानते नहीं और आप नहीं हैं, वह नाम दिया है, तो वह मान लिया कि मैं रवीन्द्र हूँ, वह रोंग बिलीफ हो गयी, वही इगोइज्म है। 'मैं रवीन्द्र हूँ' ऐसा व्यवहार में तो बोलना

चाहिये। मगर व्यवहार में तो ओन्ली ड्रामेटिक होना चाहिये और आप तो रियली बोलते हैं। रिलेटिवली बोलना चाहिये। 'मैं रवीन्द्र हूँ' यह बोलना तो चाहिये मगर ऐसी बिलीफ नहीं होनी चाहिये। ऐसी तुम्हारी बिलीफ हो गयी है, वही भूल है। दूसरी कोई भूल नहीं है। वही इगोइज्म है। 'मैं इसका फादर (पिता) हूँ', यह दूसरी रोंग बिलीफ है। 'मैं इसका हसबन्ड (पति) हूँ', यह तीसरी रोंग बिलीफ है। ऐसी कितनी रोंग बिलीफ हैं?

प्रश्नकर्ता : So I am nothing ?

दादाश्री : नहीं, राइट बिलीफ है न। हम ये सब रोंग बिलीफ फ्रेक्चर कर देते हैं और राइट बिलीफ दे देते हैं।

क्या आप शंकर के भक्त हैं ?

दादाश्री : चिंता-वरीझ होती है, तो क्या दवाई ले आते हैं?

प्रश्नकर्ता : भगवान को याद करते हैं।

दादाश्री : कौन से भगवान ?

प्रश्नकर्ता : कोई भी दिल में आया, उनका नाम लेते हैं। कभी शंकर बोलते हैं, कभी विष्णु।

दादाश्री : भगवान तो एक ही तय करना चाहिये। सब भगवान को रखेंगे तो कौन तुम्हारा काम करेगा? आप एक भगवान को तय कर लें।

प्रश्नकर्ता : तो फिर शंकर भगवान।

दादाश्री : हाँ, तो विष पिया था कभी तुमने? वे शंकर भगवान तो ज़हर पीकर शंकर हो गये। तो आपको भी कुछ पीना चाहिये न? तो फिर आप भी शंकर हो जायेंगे। हमने ज़हर पिया, तो हम शंकर हो गये।

कभी तुम्हारी औरत तुमको ज़हर नहीं देती? तुमको ऐसा नहीं बोलती कि, 'तुम्हारे में अक्ल नहीं है। तुम मूर्ख आदमी हो, तुम अच्छे आदमी नहीं हो' ऐसा तैसा?

प्रश्नकर्ता : कभी कभी ऐसा कहती है।

दादाश्री : वह राजीखुशी से पी लेना, वही ज़हर है। ऐसा ज़हर पी लेने का, तो आप भी शंकर हो जायेंगे। शंकर को कभी खुश करना हो तो अगर तुमको कोई गाली दे दे, तो उसका प्रतिकार नहीं करने का। उसको निगल जाने का। कोई कैसा भी ज़हर दे तो पी जाने का। तुमको कोई ज़हर का ग्लास देता है?

प्रश्नकर्ता : मतलब किसी न किसी तरह का दुःख तो जीवन में होता रहता है।

दादाश्री : हाँ, तो जैसे कोल्ड ड्रिंक पी जाते हैं, वैसे यह ज़हर आराम से पी सकते हो? वह आराम से पी लेने का। उसके लिए खराब ध्यान भी नहीं करना चाहिये, प्रतिकार भी नहीं करना चाहिये और इसको कोल्ड ड्रिंक की तरह पी लेने का। तो फिर इससे शंकर हो जाओगे। It is also a cold drink to be a Shankar ! धीरे धीरे जैसे कोल्ड ड्रिंक पीते हैं ऐसे आराम से पीने का। एकदम पीयेगा तो आपको उसके प्रति रुचि नहीं है, उसका भय लगता है, ऐसा मालूम होगा।

प्रश्नकर्ता : लोग कहते हैं कि शंकर भगवान की जट़ा है और उसमें से गंगा बहती है। लोग ये विश्वास करते हैं, मगर किसी ने देखा तो नहीं है।

दादाश्री : वह तो अवलंबन है। वे सब प्राकृतिक गुण हैं। वह हेल्प करता है। शंकर के स्वरूप को समझने की जरुरत है। जो लिंग हैं न, उसके दर्शन करते हैं। वह लिंग शंकर का स्वरूप नहीं है, शंकर का स्वरूप तो कल्याण स्वरूप है और मोक्ष स्वरूप है। ऐसे शंकर के दर्शन हो जायें तो काम हो जाता है। शंकर के दर्शन करने की सबको

इच्छा होती है, किन्तु बात समझ में नहीं आती। हम शंकर के दर्शन करा देते हैं।

कोई शंकर की भक्ति करे, कोई माताजी की भक्ति करे, यह सब लोक व्यवहार है। बचपन में जो संजोग मिलते हैं, उसके अनुसार व्यवहार करता है और उससे संसार चलता है और अपना मन भी ठीक रहता है। मोक्ष में जाने के लिए तो अंदर बैठे हैं, वही भगवान को पहचानना होगा। अंदर जो हैं वही सबसे बड़े महादेव हैं। अंदरवाले महादेवजी की कभी भक्ति की थी?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो बाहरवाले महादेव जी की ही भक्ति की है?

प्रश्नकर्ता : सब बाहरवाले ही तो दिखाते हैं।

दादाश्री : मगर अंदर जो हैं न, वही सच्ची बात है। इससे बड़ा देव कोई नहीं है। जब तक इसकी पहचान न हो, तब तक दूसरे देव की भक्ति करनी चाहिये।

प्रश्नकर्ता : पहले बाहर का ही कुछ होगा तो अंदर जायेगा न?

दादाश्री : मगर अंदर क जो साक्षात्कार हो गया तो काम पूरा हो जाता है। बाहरवाले की भक्ति तो बहुत दिन से करते हो, कितने जन्म से करते हो, फिर भी पूरी नहीं होगी। वह तो जन्मोजन्म चालू ही रहेगी। कितने जन्मों से बाहर का ही करते हो लेकिन अंदरवाले की पहचान कभी नहीं हुई।

प्रश्नकर्ता : वह अंदरवाले की पहचान कैसे हो?

दादाश्री : वह 'ज्ञानी पुरुष' करा सकते हैं। कृपा से सब कुछ होता है, फिर साक्षात्कार हो जाता है और वह कभी जाता नहीं है, फिर दिन-रात, पल-पल उसकी ही भक्ति होती है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी की पहचान कैसे हो कि यह 'ज्ञानी' हैं?

दादाश्री : वह हमें ऐसा साक्षात्कार करायें और वह साक्षात्कार सफल हो जायें तो हमें समझ जाने का कि यह 'ज्ञानी' हैं। सफल नहीं हुआ तो अज्ञानी है ऐसा समझ जाने का। दूसरी क्या परीक्षा करने की? साक्षात्कार तो होना चाहिये न? उधार नहीं चाहिये। नग़द ही चाहिये।

माँ-बाप की जिम्मेदारी कितनी ?

प्रश्नकर्ता : अपना बच्चा हो, तो बाप को अपनी ड्यूटी समझकर उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये?

दादाश्री : पहले तो आप फादर कैसे हो गये? क्या सच्चे फादर हो गये? सर्टिफाइड फादर हैं आप?

फादर कैसे होने चाहिये? सर्टिफाइड फादर होने चाहिये और मदर भी सर्टिफाइड होनी चाहिये। यह तो विदाउट एनी सर्टिफिकेट, फादर-मदर हो गये। यदि बच्चे ने कुछ छोटी सी गलती की, तो उसको मार मारेंगे। अरे, फादर-मदर कैसे हो गये? जब कि आपके पास कोई भी सर्टिफिकेट नहीं है ?!

फादर-मदर की जिम्मेदारी कितनी है? कि जैसे यह प्राइम मिनिस्टर साहब हैं, उन पर सारे हिन्दुस्तान की जिम्मेदारी है, वैसे आप पर चार लड़कों की जिम्मेदारी है। वह जिम्मेदारी तो समझते नहीं और फादर हो गये हैं और बोलते हैं, हम लड़के के फादर हैं!

एक लड़के का फादर था। वह लडके की मदर को बोलता था कि, 'देख, देख, देख। अरे, किधर गई, इधर आ। देख, यह अपना लड़का क्या कर रहा है! पाँव ऊँचा करके मेरी जेब में से दो आने निकाल लिए। कितना होशियार हो गया है।' और फिर मदर आई और यह देखकर खुश हो जाती है कि अपना बेटा कितना होशियार हो गया है। ऐसा कौन बोलता हैं? लड़के के फादर-मदर बोलते हैं। वह बेटा

समझता है कि ओहोहो! मैंने आज बहुत बड़ा काम किया। यह तो बेटे को चोर बना रहे हैं!! माँ-बाप की जिम्मेदारी का कुछ भान ही नहीं है और माँ-बाप बन बैठे हैं। रिस्पोंसिबिलिटी है कि नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ। तो फिर सर्टिफाइड फादर-मदर याने क्या?

दादाश्री : सर्टिफाइड याने संस्कारी होने चाहिये। संस्कारी नहीं है, तो पहले संस्कार सीखने चाहिये। जहाँ संस्कारी पुरुष रहते हैं, वहाँ जाकर संस्कार समझ लेने चाहिये, कि बच्चों के साथ कैसा बर्ताव रखना, वाइफ के साथ कैसा बर्ताव रखना चाहिये। वो सब समझ लेना चाहिये। अभी तो अपने यहाँ संस्कार का कोई कालिज भी नहीं है न!!!

व्यवहार नि:शेष का इक्वेशन !

आप लोग फादर को क्या बोलते हैं?

प्रश्नकर्ता : डैडी।

दादाश्री : और वह डैड़ी अपने लड़के को क्या बोलता है?

प्रश्नकर्ता : बेटा।

दादाश्री : बेटा? हाँ, तो वो बेटा बड़ा हो तो डैडी उसको क्या बोलते हैं? बेटा? और चालीस साल का हो जाये तो क्या बोलते हैं?

प्रश्नकर्ता : बेटा ही बोलते हैं।

दादाश्री : वह बेटा हररोज डैडी को 'डैडी, डैडी' करके खुश करता है। एक दिन बेटा गुस्से में आ गया और डैडी को बोल दिया कि 'तुम नालायक आदमी हो, तुम ऐसे हो, वैसे हो' तो फिर ? ये पज़ल कैसे सोल्व होगा? जैसे एलजब्रा में इक्वेशन करते हैं, तो इसमें कैसे इक्वेशन करेगा?

प्रश्नकर्ता : बेटे को फादर से माफी माँग लेनी चाहिये।

दादाश्री : मगर लड़का माफी माँगता नहीं। माफी माँगता तो काम हो जाता, तो इक्वेशन हो जाता। मगर चालीस साल का बेटा, वो डिप्टी कलेक्टर ओफ गोआ है, तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : Problem will remain as it is, no settlement. वैसे ही रहेगा, या तो कोई ऐसा काम बाहर से आ जाये, कोई इंसिडेन्स हो जाये, उसमें दोनों की जरूरत हो तो दोनों एक हो जायेंगे।

दादाश्री : तो भी डैडी के मन में से नहीं जायेगा, वह तो डेबिट ही रहेगा। प्रोफिट एन्ड लोस अकाउन्ट भरपाई नहीं हो जायेगा। एकाउन्ट भरपाई होना चाहिये न? एलजब्रा में इक्वेशन होता है, तो व्यवहार में भी इक्वेशन चाहिये, नहीं तो बैलेन्स कैसे करेगा? तो व्यवहार में इक्वेशन कैसे करेगा? बेटा तो डैडी को क्या बोलता है कि 'तुम जैसा था वैसा मैंने बोल दिया।' इसलिए उसको इक्वेशन नहीं मंगता। मगर ड़ैडी को तो नींद नहीं आती है, तो क्या करने का?

एक आदमी किसी व्यापारी के पास से तीन हजार रुपये ले गया और फिर दस साल तक भरपाई नहीं किया तो व्यापारी क्या करता है? व्यापारी घाटे के खाते में उधार करके उस आदमी के नाम जमा कर देता है। वह उसके नाम पर जमा कर देता है कि नहीं ? इक्वेशन तो करना चाहिये न?

तो डैडी के माइन्ड में से वरीज़ निकल जाये, ऐसा कुछ करना चाहिये न? तो क्या करोगे? अगर वह डैडी हमको मिल जाये तो हम बता देंगे कि 'तुम इक्वेशन कर दो।' वो बोलेगा कि 'कैसे इक्वेशन करने का?' तो हम बतायेंगे कि You are not permanent Daddy. You are temporary Daddy. डैडी परमानेन्ट है कि टेम्पररी?

प्रश्नकर्ता : टेम्पररी।

दादाश्री : हाँ, और वह लड़का भी टेम्पररी है। डैडी भी टेम्पररी

है और बेटा भी टेम्परारी है, तो इक्वेशन से डैडी कैसे हो गया? आई विटनेस से यह डैडी हो गया है और आई विटनेस से यह बेटा हो गया है मगर सच्चे विटनेस से, रियल विटनेस से कोई किसी का बेटा भी नहीं और डैडी भी नहीं है। फिर इक्वेशन कैसे करने का? इक्वेशन ऐसे करने का कि आई विटनेस से मैं इसका डैडी हूँ और दूसरे रिलिझन विटनेस से यह मेरे डैडी है और मैं उनका बेटा हूँ। एसा इक्वेशन किया तो बेटा भी खुश हो जायेगा। फिर बेटे को डैडी से प्रेम हो जायेगा। ऐसा इक्वेशन आप करेंगे कभी? आपकी लाइफ में इक्वेशन करना पड़ेगा कि नहीं करना पड़ेगा?

प्रश्नकर्ता : करना है।

दादाश्री : तो यह समझ में आ गया, इक्वेशन कैसे करने का?

प्रश्नकर्ता : मगर फादर ऐसी रीत नहीं अपनाये, इस तरह से न सोचे तो ?

दादाश्री : ऐसा करना ही पड़ेगा। इक्वेशन की रीत ही यह है और इस रीत से इक्वेशन नहीं करेगा तो सब रिलेशन टूट जायेंगे। क्योंकि बेटे के साथ फादर का रिलेटिव एड़जस्टमेन्ट है, रियल एड़जस्टमेन्ट नहीं है। माता, पिता, पत्नी, बेटा, सब रिलेटिव एड़जस्टमेन्ट हैं। ये शरीर के साथ भी रिलेटिव एड़जस्टमेन्ट हैं, तो माँ के साथ कैसे रियल होगा? All these are relative adjustment. वो सब आई विटनेस से है।

जब आपकी शादी हो जायेगी और कभी आपकी औरत बहुत गुस्सा हो गई, तो फिर क्या दवाई लगायेंगे ? आपको बोलेगी कि यु आर अनफिट। ऐसा-वैसा बोलेगी, तो आप क्या मेडेसीन करेंगे?

प्रश्नकर्ता : सेइम इक्वेशन आ गया?

दादाश्री : हाँ, Husband is wife's wife. यह इक्वेशन लगा

देने का, फिर कोई परेशानी नहीं। हम ज्ञानी नहीं हुए थे, तब तक हम इक्वेशन से सब जगह ऐसे ही रहते थे।

हमारा भतीजा हमको 'काका, काका' बोलता था। क्या बोलते है आपकी भाषा में? चाचा बोलते हैं न? तो हमको 'चाचा' बोले तो हमारे को बोझ बढ़ जाता था। हमको ज्यादा मान दे दिया, तो मान का बोझ लगेगा न? तो फिर मैं मन में ऐसा बोलता कि 'वह मेरा चाचा है, मैं उसका भतीजा हूँ।' तब बोझ कम हो गया।

ऐसा इक्वेशन कर देगें न? तो लोग क्या बोलेंगे कि 'मैंने इतना कुछ बोल दिया तो भी इनके मुँह पर कुछ असर नहीं है। हमने इतना बोल दिया, तो भी आपको कुछ नहीं लगता?' तो आपको बोलने का, कि 'मेरे को लगता तो है, मगर तेरे प्रेम की वजह से मेरे को कुछ नहीं लगता।' तो फिर वह तुम्हारे पर ज्यादा प्रेम रखेगा।

चौबीस तीर्थंकरों का मार्ग कैसा है? उसका फाउन्डेशन व्यवहार का है। पहले व्यवहार चाहिये। व्यवहार बिलकुल करेक्ट चाहिये, आदर्श व्यवहार चाहिये।

हिसाबी व्यवहार को कब तक रियल मानोगे ?

प्रश्नकर्ता : हमारा पौत्र गुजर गया है, उसका दु:ख दूर हो जाये और मन को शांति मिले, इतना ही चाहिये।

दादाश्री : हम सब रोना शुरू करें तो वह बच्चा वापस आ जायेगा?

प्रश्नकर्ता : ऐसा तो नहीं होता। आज तक ऐसा नहीं हुआ है।

दादाश्री : तो फिर कुदरत की मरजी के खिलाफ क्यों चलते हो? और दूसरे बच्चे हो जायेंगे, इसमें क्या घबराने का?

प्रश्नकर्ता : ऐसा लगता है कि इतने थोड़े समय के लिए हमारे

पास आकर हमको दु:ख देकर क्यों चला गया?

दादाश्री : वह खाते में जितना हिसाब था, वह सब हिसाब चुकता कर दिया और जितना दु:ख देने का था, उतना दु:ख देकर चला गया।

प्रश्नकर्ता : हिसाब क्या चीज़ है?

दादाश्री : वह तो पूर्वजन्म का लेन-देन है, और कुछ नहीं है, कोई संबंध ही नहीं है। कोई रियल फादर भी नहीं है और कोई रियल लड़का भी नहीं। वह तो सब रिलेटिव हैं। रियल लड़का हो तो फादर जब मर जाता है, तो लड़के को भी उसके साथ जाना चाहिये। मगर कोई नहीं जाता उनके साथ, यह तो सब रिलेटिव हैं। सिर्फ हिसाब ही है। उसका थोड़ा तो दु:ख होता है, मगर इतना ज्यादा दु:ख नहीं होना चाहिये।

आप रोते हैं तो भगवान को बुरा लगता है। आज रो रहा है, कल रोयेगा, परसों रोयेगा चाहे कितना भी रोयेगा तो भी एक दिन रोना तो बंद करना ही पड़ेगा न?! इसमें क्या फायदा? घर में पाँच आदमी इक्टठे होते हैं, उन सबका हिसाब ही है मात्र। दूसरा कोई संबंध नहीं। व्यापारी और ग्राहक के जैसे संबंध हैं। दूसरा कोई संबंध है नहीं। यह तो आपने संबंध बनाया है कि, 'यह हमारी मदर है। यह हमारी वाइफ है।' वे सब विकल्प है। यह तो खाली एड़जस्टमेन्ट लिया है आपने। सब सब का हिसाब लेने के लिए जमा हुए हैं। जिसका हिसाब पूरा हो गया, वह चला जाता है। फादर भी चले जाते हैं। सच्चा लड़का कभी आपने देखा है? जो मर गया, वह आपका सच्चा लड़का था?

प्रश्नकर्ता : भौतिक देह में ऐसे कह सकते हैं कि वह सच्चा था।

दादाश्री : वो रियल लड़का नहीं था आपका। अगर रियल लड़का होता तो उसको जब जला दिया, तब आप भी उसके साथ बैठे होते। क्यों नहीं बैठे ? वो रियल नहीं है, वह रिलेटिव है। सच्चा संबंध

नहीं है, रिलेटिव संबंध है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसकी आत्मा चली जाती है, फिर अपना उसके साथ संबंध नहीं रहा न?

दादाश्री : हाँ, मगर वह संबंध रिलेटिव संबंध था और आप के साथ कुछ हिसाब बाकी था, वह ऋणानुबंध था। और उससे ही सारा जगत चलता है।

प्रश्नकर्ता : यह ऋणानुबंध क्या है? कैसे होता है?

दादाश्री : आपका और आपके लड़के का जो व्यापार (संबंध) चल रहा है, उसमें आप अतिरेक करते हो, इससे फिर ऋणानुबंध शुरु हो जाता है। साधारण व्यवहार हो तो कुछ हर्ज नहीं है। आपने लड़के को गाली दिया, तो वो भी तय करता है कि, 'मैं भी उनको मार दूँ।' इससे सब दूसरे जन्म में इक्ट्ठे होते हैं और जो दिया था, वह फिर वापस आता है। जो लिया था, वही वापस देता है। बस, वही धंधा है।

प्रश्नकर्ता : कोई लड़का बाईस साल का या चौबीस साल का होकर मर जाये और दु:ख पहुँचाकर जाये तो वह कौन से कर्म का फल है?

दादाश्री : यह दुनियाँ ऐसी है, आप दूसरों को दु:ख देंगे तो वो लोग आपको दु:ख देंगे। आप दूसरों को सुख देंगे तो लोग आपको सुख देंगे। यह सब ऐसी ही व्यवहार की बात है। जैसा आप करते है, उसका वैसा ही बदला मिलता है।

प्रश्नकर्ता : मगर यह तो छोटा बच्चा था, निर्दोष था, मासूम था।

दादाश्री : वह तो आपका जो थोड़ा हिसाब था, वह कम्पलीट हो गया। थोड़ा खर्चा कराने का और दु:ख देने का भी थोड़ा हिसाब था। उतना पूरा हो गया, तो फिर वो चला गया। अगर बाईस साल का होकर फिर मर गया होता तो आपको कितना दु:ख होता ?

दूसरे आदमी का लड़का नहीं मरता ? जब आपका पौत्र मर जाये तो आपको दुःख लगता है, तो दूसरे का लड़का मर जाये तब भी उतना ही दुःख होना चाहिये। हमें तो समान होना चाहिए न? आपको कैसा लगता है ? यह तो अपने खुद के लिए रोते हैं। दूसरों के लिए आपको कुछ नहीं होता ?

प्रश्नकर्ता : नहीं, सबके लिए होता है।

दादाश्री : सबका? इस वर्ल्ड में सबके लिए आपको ऐसा दुःख होता है ? नहीं, आपको सबके लिए ऐसा नहीं होता है। समानता होनी चाहिये। समानता हो जाये तो सब तुम्हारी इच्छा के मुताबिक हो जाये। ऐसी समानता नहीं होती है आपको, इसलिए ऐसा दुःख होता है। समानता चाहिये न? यह तो स्वार्थ की बात है कि जो दूसरे का है, वहाँ आपको समानता नहीं रहती।

ये जो दुनियाँ के संबंध हैं, वे तो रिलेटिव संबंध हैं, रियल नहीं हैं। All these relatives are temporary adjustments. जो आँख से देख सकते हैं, कान से सुन सकते हैं, वे सब टेम्पररी एडजस्टमेन्ट हैं और आप परमानेन्ट हैं । जो रिलेटिव एड़जस्टमेन्ट हैं, वह तो टेम्पररी ही है। कोई जल्दी जाता है, कोई देरी से, वह भी रिलेटिव है। सब रिलेटिव है। उसमें कोई रियल है, परमानेन्ट है, ऐसा मान लेना ही नहीं।

जितना आपका इसके साथ संबंध था, हिसाब था, उतना हिसाब पूरा हो गया, चुकता हो गया तो वह चला गया। ये तो गेस्ट हैं सब। अपने घर गेस्ट आते हैं, वह फिर चले जाते हैं कि नहीं चले जाते? अच्छा गेस्ट हो, आप उसको बोलें कि 'आप मत जायें, आपके घर मत जायें, हमारे यहाँ रहो' तो क्या वह रहेगा? नहीं रहेगा। ऐसे ये सब कुदरत के गेस्ट हैं। आप भी कुदरत के गेस्ट हैं। कोई किसी का लड़का नहीं है। यह सब ड्रामेटिक है। जैसे ड्रामा में लड़का होता है, तो वह ड्रामा के

टाइम तक ही होता है। इस तरह लड़का कोई किसी का होता ही नहीं।

ये जो बिलीफ हैं, कि मेरे पास मकान नहीं है, मुझे लड़का नहीं है, मुझे लड़की नहीं है, ये सब रोंग बिलीफ हैं।

1928 में हमारे पहला लड़का हुआ था। उसका जन्म हुआ, तब हमने फ्रेंड सर्कल को बड़ी पार्टी दी थी। बच्चा भी ऐसा रूपवाला था, ब्युटिफूल था। सब लोग बोलते थे कि हमने जो संतो की सेवा की थी, उसका फल मिला है। डेढ़ साल के बाद वो ओफ हो गया। इधर हमने फ्रेंड सर्कल को फिर से बड़ी पार्टी दी, जलसा करवाया। सब लोग समझने लगे कि दूसरा लड़का आ गया। वे सब पूछने लगे। पार्टी पूरी होने के बाद हमने बोल दिया कि जो गेस्ट आया था, वह चला गया!!! इसके बदले में मैंने पार्टी दी है। उसके थोड़े साल बाद लड़की आई। वह भी चली गयी। फिर उसके लिए भी पार्टी दी !!! क्योंकि मैं जानता हूँ कि कोई आत्मा किसी का लड़का हो नहीं सकता। यह सिर्फ रोंग बिलीफ ही है। आपका लड़का हो तो उसको तुम एक घंटे खूब गाली दो, मारपीट करो, तो फिर वह क्या बोलेगा?

प्रश्नकर्ता : बाप का नहीं मानेगा।

दादाश्री : नहीं, वह आपके साथ झगड़ा करेगा और कोर्ट में चला जायेगा। अपना लड़का हो तो ऐसा नहीं करेगा। उसको मार डालो तो भी ऐसा नहीं करेगा। मगर अपना लड़का होता नहीं न? सिर्फ रोंग बिलीफ है और रिलेटिव व्यू पोइन्ट है। यह रियल व्यू पोइन्ट नहीं। इधर कोई आदमी मर जाता है तो फिर उसके पीछे उसका लड़का कोई मर जाता है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो यह रियल बात नहीं है। ये सब रिलेटिव बातें हैं। आपका लड़का हो, उसको एक घंटा गाली दो तो वह एक घंटे में अलग

हो जाता है न? और वाइफ के साथ झगड़ा हो जाये तो? डिवोर्स भी हो जाता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हो जाता है।

दादाश्री : फिर यह करेक्ट नहीं है, टेम्परारी है। मगर टेम्परारी भी नहीं पूरा। टेम्परारी भी जो 50 साल, 60 साल करेक्ट होता तो फिर हर्ज नहीं। मगर टेम्परारी भी करेक्ट नहीं है। यह खाट है, इसके साथ ऐसे आधार रखकर बैठें तो इसका आधार अच्छा है कि हम कभी गिर नहीं जाते। मगर यह जिन्दे आदमी का आधार रखा तो कभी भी गिर जाते है। मगर नेचर का एरेंजमेंट ऐसा है कि एक दूसरे के बिना चलता ही नहीं। ऐसा टेम्परारी भी थोड़े टाइम के लिए रहता है, एकदम चला नहीं जाता। मगर वह खाट भी कोई दफे तो टूट जाती है न? याने ये भी रिलेटिव है। ये सब एड़जस्टमेन्ट है और वो सब रिलेटिव है। और ये बॉडी के साथ भी अपना रिलेटिव एड़जस्टमेन्ट है, रियल एड़जस्टमेन्ट नहीं है। ये बॉडी भी एकदम चली नहीं जाती, मगर वह भी रियल एड़जस्टमेन्ट तो नहीं है।

यह मनुष्य का शरीर (मिला) है, तो इससे अपना काम कर लेना है। सेल्फ रियलाइजेशन कर लो। फिर यह शरीर चला जाये तो कोई हर्ज नहीं। यह काम कर लो। काम नहीं कर लिया (निकाला) तो मनुष्य जन्म ऐसे ही व्यर्थ चला जाता है, वेस्ट चला जाता है।

यह जो आपका लड़का है, उसका आपके साथ ग्राहक और व्यापारी के जैसा संबंध है। व्यापारी को पैसा नहीं दिया तो माल नहीं देगा और व्यापारी माल अच्छा देगा तो ग्राहक लेगा, ऐसा व्यापारी-ग्राहक का संबंध है। आप लड़के को प्रेम देंगे तो वह भी आपके साथ अच्छा रहेगा, आपको नुकसान नहीं करेगा। उसको तुम गाली देंगे, तो वह भी तुमको मारेगा। ये लड़का-लड़की, सच्चे लड़का-लड़की नहीं रहते किसी के।

आज के लड़के कैसे हैं कि उसको बाप जरा गाली दे, गुस्सा करे तो वे क्या करेंगे? बाप को छोड़कर चले जायेंगे। अरे, कोर्ट में दावा भी करेंगे। एक लड़का उसके बाप के सामने केस जीत गया। बाद में बहुत खुश हो गया। वह लड़का फिर वकील को बोलने लगा, 'वकील साहब, एक काम करो तो आपको तीन सौ रूपये ज्यादा दे दूँगा।' वकील ने पूछा, 'क्या काम करना है?' तब लड़के ने बताया, मेरे फादर की कोर्ट में थोड़ी नाक कटनी चाहिये!!! वकील ने बोला कि, 'यह तो सरल बात है, हम नाककटाई करा देंगे।'

बोलिये, अब खुद का लड़का कैसा हो सकता है? यह तो ऋणानुबंध है, हिसाब है। हिसाब में कुछ बाकी हो तो जरूर आयेगा और हिसाब नहीं हो, बहीखाता क्लीयर हो तो कोई नहीं आयेगा!

प्रश्नकर्ता : पत्नी के प्रति फर्ज है, पुत्र के प्रति फर्ज है, वे सब फर्ज़ तो अदा करने पड़ेंगे न ?

दादाश्री : फर्ज़ याने फरजियात। आप नहीं करें, आपके विचार में नहीं हो तो भी करना पड़ेगा। वह सब फरज़ियात है।

कोई चीज इस दुनिया में वोलन्टरी नहीं है। जन्म से मृत्यु तक कोई चीज वोलन्टरी नहीं है। सब उसको मानते हैं वोलन्टरी है, मगर एक्जैक्टली ऐसा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो वोलन्टरी कुछ नहीं है?

दादाश्री : वोलन्टरी है, मगर एसा जानते नहीं। वोलन्टरी अंदर है, वह मालूम नहीं है और जो वोलन्टरी नहीं है, फरज़ियात है, उसको वे अपनी ड्युटी बोलते हैं।

प्रश्नकर्ता : सोसायटी में रहते हैं तो ये सब रिलेशन मैन्टैइन करने चाहिये।

दादाश्री : हाँ, संसार में रहना ही चाहिये और औरत के साथ सिनेमा में जाना चाहिये, लड़के के साथ बैठना चाहिये, साथ में खाना-पीना चाहिये। मगर सच्ची बात समझकर करनी चाहिये। मगर सच्ची बात क्या है, वह तो समझनी चाहिये न? एक आदमी ने ब्रांडी पी तो वह नाज़-नखरे करता है न? ऐसे यह भी सब नाज़-नखरे हैं। और अगर ब्रांडी नहीं पी तो कोई परेशानी नहीं रहती है। ऐसी बात समझ गये तो ब्रांडी के जैसी कोई परेशानी नहीं रहती है। सच्ची बात तो समझनी चाहिये न? ऐसी झूठी बात कहाँ तक चलेगी?

प्रश्नकर्ता : यह लाइफ भौतिक है और भौतिकवाद में कुछ टेन्शन होना जरूरी है। टेन्शन के बिना तो कुछ नया हो नहीं सकता, कुछ प्राप्ति नहीं कर सकते।

दादाश्री : आप क्या नया करेंगे? क्या नया आविष्कार करेंगे? नयी दुनियाँ बनायेंगे? जो आविष्कार करते हैं, उसको टेन्शन रहता ही नहीं। जो मेहनत करता है, उसको ही टेन्शन रहता है। मैं सारी दुनियाँ में घूमता हूँ मगर मेरे को बिलकुल टेन्शन नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आपका स्टेज तो अलग है।

दादाश्री : नहीं, मगर वह रियलाइज हो गया तो क्या होता है कि संसार का कोई टेन्शन नहीं रहता और संसार में सबको बहुत अच्छा प्रेम, सच्चा प्रेम मिलता है। अभी तो आपके पास प्रेम नहीं है, आसक्ति है, इसीलिए तो थोड़े-थोड़े टाइम पर गुस्सा हो जाते हो। यह क्या तरीका है? सच्चा प्रेम होना चाहिये। गुस्सा कभी भी नहीं होना चाहिये।

व्यवहार के हिसाबी संबंध में समाधान कैसे ?

प्रश्नकर्ता : यह संसार है, उसमें हम घर में रहते हैं, मोटर-बंगले हैं, इन सबमें रहते हुए भी, हम धर्म कर सकें ऐसा हो सकता है क्या?

दादाश्री : धर्म के बिना तो संसार चलता ही नहीं। पहले धर्म चाहिये और संसार उसके साथ रहना चाहिये।

प्रश्नकर्ता : लोग तो ऐसा कहते हैं कि धर्म ही चाहिये और संसार को छोड़ देना चाहिये। यह सब है क्या?

दादाश्री : नहीं, धर्म के बिना संसार ही नहीं। पहले धर्म चाहिये। किस चीज को धर्म बोलती हो? आपके भाई के साथ आप धर्म रखोगी या अधर्म रखोगी? भाई को गाली दोगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : क्योंकि गाली देना अधर्म है और गाली नहीं देना, मेरा भाई अच्छा है, ऐसा वह कहना धर्म है। धर्म तो होना ही चाहिये। संसार को व्यवहार बोला जाता है। हम व्यवहार में आदर्श रहते है और सारा दिन धर्म में ही रहते हैं। हम किसी को गाली नहीं देते, किसी का बुरा नहीं करते। हमको कोई पत्थर मारे तो भी हम गाली नहीं देते और आपको कोई पत्थर मारे, तो आप क्या करोगी?

प्रश्नकर्ता : मैं भी पत्थर लेकर मारूँगी।

दादाश्री : हमको कोई पत्थर मारे तो हम गाली नहीं देते और खुदा को बोलते हैं कि इसको सद्‌बुद्धि दो। दो नुकसान नहीं होने चाहिये। एक तो पत्थर लग गया, फिर गाली देकर दूसरा नुकसान क्यों करें ?

प्रश्नकर्ता : पहला नुकसान फिजिकल और दूसरा स्पिरिचुअल!

दादाश्री : हाँ, जेब काट ली तो पाँच हजार तो गये फिर उसके साथ झगड़ा क्यों करें ? झगड़ा करने से दो नुकसान होते हैं। एक तो नुकसान हो गया और फिर दूसरा झगड़ा किया। उससे नींद भी नहीं आयेगी। उसको आशीर्वाद दे दिया तो अपने को नींद आयेगी। ये बात पसंद आयी आपको?

और शादी करेगी, फिर हसबन्ड के साथ कैसे रहोगी?

प्रश्नकर्ता : धर्म के साथ।

दादाश्री : हाँ, कभी हसबन्ड का दिमाग गर्म हो गया तो हमें शांत रहने का। हसबन्ड दो गाली दे दे तो भी शांत रहने का। हम क्या बोलते हैं कि 'Adjust everywhere.' सास अच्छी न हो तो उसके साथ भी एडजस्ट हो जाना।

प्रश्नकर्ता : चुप हो जाने का?

दादाश्री : चुप नहीं होना, एडजस्ट हो जाना। उसके अंदर खुदा बैठे हैं, उसको प्रार्थना करना कि 'हे खुदा, उसको अच्छा दिमाग दो, सद्बुद्धि दो।' तो उसको फोन पहुँच जायेगा। खुदा सबके अंदर बैठे हैं न? और गाली देगी तो बुद्धि अच्छी नहीं रहेगी। हमने बताया ऐसा करोगी तो सास भी खुश हो जायेगी। वह कहेगी, 'ऐसी बहू तो देखी ही नहीं हमने।' वह जो कुछ दु:ख हमको देगी, वह तो उसके साथ हमने अधर्म किया था वही होगा। तुम फिर से उनके साथ अब अधर्म नहीं करना।

हसबन्ड मुझे कायम के लिए दबा देगा, ऐसा डर मन में नहीं रखना। ऐसे कोई दबा नहीं सकता। हसबन्ड गाली दे और आप एडजस्ट हो गईं तो वह आप से डर जायेगा, घबरा जायेगा। तब आप बोलना कि, 'घबराना मत, मैं आपकी ही हूँ', ऐसा करने से आपका चारित्रबल उत्पन्न होगा। जिसका चारित्रबल है, उससे सब आदमी घबराते हैं।

प्रश्नकर्ता : यह चाबी मुझे बहुत पसंद आयी।

दादाश्री : हाँ, इससे ही चारित्र उत्पन्न होता है, इससे ही शील उत्पन्न होता है। शील से सामनेवाले पर अपना प्रभाव पड़ता है, सामनेवाला घबराता है।

कोई आदमी हमें पत्थर मारे और फिर हमारे पास आये, बोले कि 'मेरी भूल हो गयी।' फिर हम कुछ नहीं करें, तो हमारे साथ फिर ऐसा कभी नहीं करेगा। कोई दूसरा हमको पत्थर मारने को आयेगा तो भी वह उसको भगा देगा और बोलेगा कि 'ये बड़े आदमी हैं।' बड़ा आदमी किसको बोलते हैं? जो गाली देता है उसको?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो बहुत छोटा होता है।

दादाश्री : जिसमें चारित्रबल है, वही बड़ा है।

वाइफ और हसबन्ड का झगड़ा होता है कि नहीं होता ? बहुत होता है, तो आपने सोचा नहीं कि हसबन्ड के साथ क्या करूँगी ? पहले से सोचा नहीं था ?

प्रश्नकर्ता : मैं वही सोचती थी कि मैं क्या करूँ।

दादाश्री : हाँ, तो हमने जो बता दिया है, ऐसे रखना। कभी मन में ऐसा नहीं सोचो कि हमको हसबन्ड दबा देगा। कोई भी बात हो, आप छोड़ देना। जितना आप छोड़ दोगी, उतना चारित्रबल प्रगट होगा। दूसरी बात यह है कि कभी कोई गाली दे तो उसको आशीर्वाद देना। गाली देनेवाला कितनी गाली देगा? जितना आपका हिसाब है, उतनी ही गाली देगा। उससे ज्यादा गाली नहीं देगा। उसकी भी हद होती है। हसबन्ड के साथ झगड़ा हुआ तो फिर संसार फ्रेक्चर हो जायेगा। फिर भले ही दोनों साथ में रहते हैं मगर मन टूट जाते हैं।

इतनी बात समझ में आ गयी तो बहुत हो गया।

गृहस्थी में मतभेद, सोल्युशन कैसे ?

दादाश्री : आपको कृष्ण भगवान के साथ झगड़ा नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : नहीं है।

दादाश्री : कृष्ण भगवान को तीर लगा था, यह मालूम है ? तो

यह कैसी दुनियाँ है ? और रामचंद्रजी को क्या कुछ कम अड़चनें आयीं थीं ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, उन्हें बनवास जाना पड़ा था और 'सीता, सीता' करके घूम रहे थे।

दादाश्री : बनवास का तो ठीक है। अभी तो ये सब लोग बैठे हैं न, इन सबको क़ायम का बनवास है। जन्मे तब से ही बनवास है। मगर रामचंद्रजी की पत्नी को तो हरण करके ले गया था। ऐसा इधर इन सबके साथ तो नहीं होता न? कितना आनंद है! ऐसी कोई तकलीफ तो आपको नहीं आयी न?

प्रश्नकर्ता : अभी तक तो नहीं आयी।

दादाश्री : आपका औरत के साथ कीसी दिन झगड़ा नहीं हुआ था?

प्रश्नकर्ता : सांसारिक जीवन में होता ही रहता है।

दादाश्री : ऐसा झगड़ा होता है तो फिर शादी करने का क्या फायदा ? एक आदमी हमारे पास आया, वह हमको बोलने लगा कि, 'मेरी औरत ने मुझे मारा।' तो उसका क्या न्याय करने का ? आप कहें, आपकी दृष्टि में क्या न्याय लगता है ? औरत को फाँसी पर चढ़ाना चाहिये ?

प्रश्नकर्ता : फाँसी पर क्यों चढ़ाने का! मर्द और औरत का तो आपस का संजोग है।

दादाश्री : तो फिर मार खाने का ? ऐसी शादी में क्या फायदा कि जहाँ मार भी खाने का ! मगर सब लोग शादी करते हैं न ? फिर 'यह मेरी वाइफ, यह मेरी वाइफ' करता है मगर वह पिछले जन्म की वाइफ का क्या हुआ ? यह सब पिछले जन्म के लड़कों का क्या हुआ ? वे सब उधर छोड़कर आया और ऐसे ही यहाँ छोड़कर आगे जायेगा।

क्या यही धंधा है ? यह पज़ल सोल्व तो करना चाहिये न ? कब तक ऐसे पज़ल में रहोगे ?

कभी औरत पर क्रोध हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : जो अच्छा अच्छा लड्डू देती है खाने को, उसके ऊपर भी क्रोध करते हो ? वहाँ तो क्रोध नहीं करना चाहिये। बाहर पुलिसवाले पर क्रोध करो तो कोई हर्ज नहीं है। वहाँ क्रोध नहीं करते? वहाँ क्यों कंट्रोल में रहते हैं ?

प्रश्नकर्ता : वहाँ डर है।

दादाश्री : पुलिसवाले के पास निडर हो जाओ और इधर घर में डरो। जो खाना खिलाती है, सबेरे में चा-नास्ता देती है, वहाँ क्रोध करोगे तो खाने-पीने का सब बिगड़ जायेगा। वाइफ का धनी हो जाता है?! धनी होने में हर्ज नहीं है मगर धनीपन नहीं करना चाहिये। It is a drama, तो आप ड्रामा के धनी हो। The world is the drama itself !

प्रश्नकर्ता : हम गृहस्थ हैं, हमें लोकाचार का पालन तो करना पड़ता है।

दादाश्री : लोकाचार भी तुम्हारा अच्छा नहीं है। कभी कभी औरत के साथ मतभेद हो जाता है, फ्रेन्ड के साथ मतभेद हो जाता है न? लोकाचार आदर्श होना चाहिये। हमारी भी औरत है, मगर वह तो 'पटेल' की है, 'हमारी' तो कोई औरत नहीं है। इस 'पटेल' की औरत है, मगर एक भी मतभेद उसके साथ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यह कैसे संभव है ? मतभेद तो रहेगा ही।

दादाश्री : मतभेद तो कभी हुआ ही नहीं। वह कभी बोले

कि, 'आप ऐसे हैं, वैसे हैं, भोले हैं, लोगों को सब दे देते हैं'। तो मैं बोलता हूँ कि, भाई, पहले से ही मैं ऐसा था, आज से नहीं। फिर कैसे मतभेद होगा ? अभी तो ऐसा कुछ बोलती ही नहीं है और हमारा दर्शन करती है।

बीबी से एड़जस्टमेन्ट की चाबी !

प्रश्नकर्ता : अपनी बीबी-बच्चों से एड़जस्टमेन्ट कैसे करना?

दादाश्री : बीबी के साथ कभी झगड़ा नहीं करने का। बीबी झगड़ा करे तो हमें बोलने का कि किस लिए झगड़ा करती हो ? इसमें क्या फायदा है? फिर भी वह बोलती है तो बोलने दो, कोई एतराज नहीं।

प्रश्नकर्ता : वह बोलेगी और हम रोकेंगे नहीं तो उसमें और खराबी हो जायेगी न?

दादाश्री : उसको क्या मूछें आ जायेंगी ? वह क्या पुरुष हो जायेगी ? यह तो खाली डर है। यह तो डर से जग में झगड़े चलते हैं। हमने देखा है कि एक जन्म का किसी के हाथ में नहीं है। आप उसको मार-मार करेंगे तो भी वह बोलेगी। इसमें आपका भी नुकसान होता है और बीबी का भी नुकसान है। यह सब छोड़ दो और क्या होता है, क्या हो रहा है, वह 'देखो'। हम सबको क्या बोलते हैं कि Adjust everywhere !

एक मियांभाई हमारा पहचानवाला था। मैंने उसको बोल दिया कि 'भाई, औरत के साथ ठीक रहता है कि नहीं?' तो कहने लगा कि 'हमारा सब ठीक है।' मैंने पूछा कि 'इन सब का बीबी के साथ झगड़ा होता है और तुम्हारा कभी झगड़ा नहीं होता?' तो बोला कि, 'हमारा कभी नहीं होता। बीबी के साथ झगड़ा करके क्या फायदा ?' मैंने पूछा कि, 'बीबी किसी दिन गुस्सा नहीं हो जाती?' तो बोलने लगा कि, 'कभी

गुस्सा हो जाती है। मगर बीबी के साथ झगड़ा करने में तो, देखो न, हमारे तो दो ही रूम हैं, तो इधर झगड़ा करेगा तो सारी रात जिस रूम में वह जागेगी और उसी रूम में मैं जागूँगा। इसमें फायदा क्या है? बीबी हमको गाली देगी, मगर बीबी को हम गाली नहीं देगा। बीबी को हम नहीं मारेगा।' मैंने कहा, 'क्यों?' तो कहता है कि, 'बीबी तो हमको सुख देती है। बीबी कितना अच्छा खाना बनाती है, अच्छा मटन भी बनाती है। फिर उसके साथ ही क्यों झगड़ने का ? हम तो पुलिस वाले को मारेगा, बाहर वाले को मारेगा, घर में किसी को नहीं मारेगा।' अपने लोग क्या करते हैं कि बाहर से मार खाकर आते हैं और घर में औरत को मारते हैं।

औरत तो देवी है। उसके साथ झगड़ा कैसे हो सकता है ? उसका दिमाग गरम हो जाये, तो भी कोई हर्ज नहीं। थोड़ी देर में दिमाग ठंडा हो जायेगा। फिर समझाना कि 'तुम क्या क्या चाहती हो, हमको एक दफे बोल दो', ऐसे उसको पटाना। आप दुकान में कैसे सबको खुश कर देते हो, वैसे घर में सबको खुश कर देना है।

यह अपनी वाइफ है, ऐसा मत मानो और यह अपने पर चढ़ बैठेगी ऐसा मत मानो। अरे, क्या चढ़ बैठेगी? उसको मूछें नहीं आयेंगी, वह औरत ही रहेगी। एक जन्म में जो तय किया है, वही होगा, ऐसा ही करेगा। तो औरत के साथ आराम से रहने का, फाइल का निपटारा (सोल्युशन) समभाव से करने का।

एक जन्म की बात आपकी समझ में आ गयी ? देखो, हम घर में अकेले हो और बाहर निकलने का हो गया, तो हम दरवाजा खुल्ला नहीं रखेंगे, ताला लगायेंगे। क्यों ऐसा करते हैं? कि इस जिंदगी में तो कुछ होनेवाला नहीं, मगर दरवाजा खुला देखकर दूसरे किसी को विचार आयेगा चोरी करने का। आज तो कुछ नहीं होगा, मगर वह अगले जन्म में चोर हो जायेगा। इसलिए ऐसे दरवाजा खुला नहीं रखने का, ताला लगाकर जाने का।

'यह मेरी औरत है' बोलते हैं न, वह रिलेटिव में है। रियल में अपने कोई सगे ही नहीं होते। बोलते हैं न कि यह मेरी माँ है, तो वह भी रियल सगापन (संबंध) नहीं है। इस बॉडी के साथ भी रियल सगापन नहीं है, तो माँ के साथ रियल सगापन कैसे हो सकता है ? वह सब रिलेटिव है।

माँ के साथ रियल सगापन हो तो माँ मर जाये, तो उसके दो-चार लड़के हों तो वे भी उसके साथ मर जाते। मगर कोई माँ के साथ नहीं मरता न! वह रिलेटिव सगाई है। रिलेटिव याने बॉडी का आधार है। यह बॉडी भी रिलेटिव है और उसका आधार भी रिलेटिव है, रियल नहीं है। मदर के साथ ब्लड रिलेशन है और फ्रेंड होगा तो उसके साथ नेबर रिलेशन है। मगर सब रिलेशन ही हैं, केवल।

व्यवहार में शंका ? समाधान, विज्ञान से !

कोई आदमी अपने यहाँ आता रहता है और एक दिन हमारे कोट की जेब में से दो सौ रुपये ले गया और इस भाई ने देख लिया। मगर दूसरे किसी ने नहीं देखा। इस भाई ने बोल दिया कि यह आदमी आपकी जेब में हाथ डाल के कुछ रुपये ले गया। तो मेरी समझ में आ जायेगा कि यह आदमी हमारे दो सौ रुपये ले गया। मगर दूसरे दिन वह फिर हमारे पास आयेगा तो भी हमको उसके लिए शंका नहीं होगी। ऐसे कितने लोगों को शंका नहीं होगी ?

प्रश्नकर्ता : नहीं, सबको शंका तो हो ही जायेगी।

दादाश्री : तो जब तक शंका है, तब तक आपको ज्ञान नहीं है। यह आदमी आया और कुछ ले गया, मगर हमको शंका नहीं होगी। कोई ले सकता ही नहीं, ये दुनिया ऐसी है। वह आदमी अगर दूसरी दफे भी ले जायेगा, तो उसका कुछ पासपोर्ट है, उससे ही लेता है। नहीं तो कोई कुछ भी ले सकता ही नहीं। इस दुनिया में किसी के पास संडास जाने की खुद की शक्ति नहीं है। All are tops !! जो खुद की शक्ति

है, वह उसको मालूम नहीं है। हम नि:शंक हैं, कौन से आधार से वह करता है, यह हम जानते हैं। कोई आदमी कुछ भी ले सकता है तो उसके पीछे कुछ आधार है। नहीं तो कोई आदमी कुछ ले सकता ही नहीं। वह आधार जिसको मालूम हो गया, फिर उसको क्या परेशानी ? उसको किसी के साथ झगड़ा करने की जरूरत ही नहीं है। आपको अभी थोड़ी शंका हो जाती है? पूरे नि:शंक नहीं हो जायें, तब तक शंका होती रहेगी।

इस वर्ल्ड में किसी से कोई चीज़ हो सकती ही नहीं। क्योंकि this is a result. जन्म हुआ, वहाँ से लास्ट स्टेशन तक रिजल्ट ही है खाली। परीक्षा अंदर हो रही है, मगर उसको मालूम नहीं है। जब रिजल्ट आता है तो झगड़ा करता है, कि यह आदमी हमारा पैसा ले गया। इसी से संसार खड़ा है। सच्ची दृष्टि नहीं है, इसलिये सब दु:ख है।

कोई आदमी कुछ भी कर सकता ही नहीं। जो पहले से टाइप हो गया है वही बात है इसमें। हमारा किसी के साथ मतभेद नहीं है। कोई रुपये ले जाये, उसके साथ भी मतभेद नहीं है। वह आदमी फिर आये तो हम उसको बोलेंगे, 'आओ, बैठो!' ऐसा नहीं बोलेंगे तो हमको उसके साथ द्वेष हो जायेगा और हमारी समाधि चली जायेगी। जहाँ द्वेष है, वहाँ समाधि नहीं है। मगर हमको निरंतर समाधि रहती है। ऐसा 'अक्रम विज्ञान' आज प्रकट हुआ है। यह वर्ल्ड क्या चीज़ है? कैसे चल रहा है? कौन चलाता है? वह दो सौ रुपये ले गया है, वह कैसे ले गया? वे सब चाबियाँ हमारे पास है। क्योंकि यह विज्ञान सर्व-समाधानी विज्ञान है। सर्व-समाधानी याने at any place, at any time, at any circumstance। सांप आयें, बड़े लुटेरे आयें, तो भी यह विज्ञान वहाँ समाधान देता है।

पिछले जन्म की पत्नी का क्या ?

प्रश्नकर्ता : यह भाई गृहस्थी में ब्रह्मचारी है, 'सात प्रतिमा'धारी

हैं (ब्रह्मचर्यव्रतधारी), लेकिन उनका दुःख ऐसा है कि मेरे मरने के बाद पत्नी का क्या होगा, इसकी बड़ी चिंता है। आप इनका समाधान करवाइए।

दादाश्री : वह पिछले जन्म की पत्नी का क्या हुआ ?

प्रश्नकर्ता : पिछले जन्म का क्या मालूम ?

दादाश्री : तो फिर किस लिए चिंता करते हो ? वह आपकी पत्नी कैसे है ? वह तो सब व्यवहार से है। वह कर्म के उदय से है। जब तक उसने डिवोर्स नहीं लिया, तब तक आपकी पत्नी है और डिवोर्स ले ले तो ?

प्रश्नकर्ता : यूं तो डिवोर्स जैसा ही है। ब्रह्मचर्य का मतलब ही यह है कि पति-पत्नी का संबंध ही नहीं है।

दादाश्री : ब्रह्मचर्य वाला पत्नी की परवाह नहीं करता। आप खुद की परवाह करें। जहाँ तक पत्नी अपने साथ है, वहाँ तक उसकी सेवा करना, दूसरों की भी सेवा करना। तुम्हारे पीछे क्या होगा यह क्या मालूम? आपका 'वहाँ' जाकर क्या होगा यह भी क्या मालूम ? आपके पास कोई सर्टिफिकेट है कि वहाँ जायेंगे तो कुछ स्थान मिलेगा? और औरत को पूछेंगे तो औरत बोलती है कि 'तुम हमारी फिकर मत करो।' आप खुद ही ऐसा करते हैं। ब्रह्मचारी को ऐसा नहीं होना चाहिये।

व्यू पोइन्ट का मतभेद, उपाय क्या ?

यह वर्ल्ड मेन्टल होस्पिटल हो गया है। हमको कोई बोलता है कि 'आप मेन्टल हैं।' तो हम बोलते हैं, 'भाई, तुम्हारी बात सच्ची है। तुमने हमको बताया, यह भी तुम्हारा उपकार है।' आप मेन्टल हैं, इतना शब्द बोलकर छोड़ दिया, वह तो हम पर कितना उपकार किया। नहीं तो दूसरा तो मेन्टल इतने शब्द से ही नहीं छोड़ देता, वह तो लकड़ी लेकर मारता, सब कुछ कर सकता। मेन्टल का क्या गुनाह ? कोई गुनाह नहीं न!

एक बैल खड़ा है उधर, तो हर एक को आप पूछेंगे कि क्या दिखता है उधर? तो कोई बोलेगा कि बैल दिखता है। कोई बोलेगा, हमको गाय दिखती है। कोई बोलेगा, हमको घोड़ा दिखता है। जिसकी जैसी दृष्टि पहुँचे, वैसा वह बोलेगा। दृष्टि नहीं पहुँचे तो फिर क्या करेगा ? फिर बोलेगा, हमको गधा दिखता है। तो क्या बुरा मानने का ? क्या हमें उस पर गुस्सा हो जाने का कि बैल है और तुम क्यों गधा बोलते हो ? उसको दिखता नहीं, फिर उसका क्या गुनाह है बेचारे का ? ऐसी ही सब भूल है दुनिया में। सच्चा दिखता नहीं, इसलिए भूल होती है।

कोई आदमी हमको बोले कि तुम गधे हो, तो हम समझ जायेंगे कि वो बात सही है। उसको जैसा दिखता है, ऐसा ही बोलता है। उसको मार मार के उसका व्यू पोइन्ट बदलवाना अच्छा नहीं है। उसको समझाकर व्यू पोइन्ट बदलवा सकते हैं। जैसा जिसका व्यू पोइन्ट है, ऐसा ही वह करता है। कुत्ता, गधा, सभी जीव और सभी आदमी भी जिसका जो व्यू पोइन्ट है, ऐसा ही करता हैं।

प्रश्नकर्ता : यह दूसरी योनि में से मनुष्य में वापस आ सकते हैं क्या ?

दादाश्री : वे सब दूसरी योनि में से ही इधर आते हैं। पशु में से कुत्ता, गधा वे सब इधर ही आते हैं। ३२% से गधा होता है और ३३% से मनुष्य होता है। ३३% से पास होता है।

प्रश्नकर्ता : मनुष्य के सिवा दूसरे जो प्राणी हैं, वे प्रामाणिक हैं। उनकी योनि में भी बहुत अच्छे गुण हैं।

दादाश्री : हाँ। उनके परसेन्ट अच्छे रहते हैं। जो ३२% से नापास हुआ हो वह मनुष्य जैसा ही दिखता है और ३३% से पास हुआ हो, वह मनुष्य में होते हुए भी जानवर जैसा दिखता है। ३३% से पास वाला तुमने देखा है कि नहीं देखा ?

प्रश्नकर्ता : देखा है।

दादाश्री : उनके साथ झगड़ा मत करो। जो ३३% से पास हुआ है, उसके साथ क्या झगड़ा करना?! जो ५०% से पास हुआ है, उसके साथ झगड़ा करो न!

प्रश्नकर्ता : जहाँ देखो वहाँ लोग स्वार्थी ही दिखाई देते हैं, ऐसा क्यों ?

दादाश्री : कभी स्वार्थी आदमी तुमने कोई देखा है ? हम अकेले ही स्वार्थी हैं !!! क्योंकि हम 'स्व' के अर्थ के लिए जीते हैं। आप जिसको स्वार्थी कहते हैं, वह स्वार्थ तो भ्रांति का स्वार्थ है याने स्वार्थ नहीं, परार्थ है। परायों के लिए सच्चा-झूठा करता है, दख़लबाजी करता है और अपार दुःख सहन करता है। वो सब परार्थी हैं। परार्थी तो खुद का स्वार्थ बिगाड़ता है।

संसार - अपनी ही दख़लों का प्रतिघोष !

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है कि कोई जीव दूसरे किसी जीव में दख़ल नहीं देता है, वह कैसे ?

दादाश्री : वर्ल्ड में दख़ल करने वाला कोई जीव है ही नहीं। वह जो दख़ल करता है, वह तुम्हारी दख़ल का प्रतिघोष है। तुम्हारी समझ में आ गया न ?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं, और समझाइये!

दादाश्री : हमने कुछ दख़ल नहीं की है, तो हमको कोई दख़ल नहीं करता। वह तुमको जो दख़ल करता है, वह तुम्हारा पहले के जन्म का हिसाब है। आपको किसी ने दो गाली दी, तो आप सोचना कि दो ही गाली क्यों देता है ? तीन क्यों नहीं देता है ? एक क्यों नहीं देता है ? फिर आप बोलेंगे कि 'भाई, दो गाली दी, अभी और दूसरी दो गाली दे दो।' तो वह बोलेगा कि क्या हम नालायक आदमी

हैं ? हम गाली नहीं देगा। गाली देना भी उसके हाथ में नहीं है। आपका हिसाब है, उतना ही मिलेगा। अगर आपको व्यापार चालू रखने का हो तो आप फिर से गाली दो और बंद करने का है तो गाली मत दो।

प्रश्नकर्ता : भगवान का न्याय और जगत का न्याय अलग है क्या ?

दादाश्री : दोनों अलग हैं। जगत का न्याय भ्रांति से होता है। ये सब भ्रांतिवाले न्यायाधीश हैं और भगवान का न्याय शुद्ध है। जैसा है वैसा ही न्याय करते हैं। दोनों न्याय अलग हैं।

जगत का न्याय तो क्या कहेगा कि, जिसने जेब काट ली, उसकी भूल है और भगवान का न्याय बोलता है कि जिसकी जेब कट गयी, उसकी भूल है। भगवान का सरल न्याय है। वास्तविक न्याय!! एक सेकन्ड भी यह जगत न्याय बिना नहीं होता है। 'जैसा है वैसा' ही न्याय देता है। तुमको दख़ल करने वाला कोई वर्ल्ड में नहीं है। तुम्हारी दख़ल एक अवतार बंद हो जायेगी, फिर कोई दख़ल करने वाला नहीं है। सारे बम्बई में गुंडागर्दी चलती है, मगर आपको कोई हाथ नहीं लगायेगा।

प्रश्नकर्ता : यह दख़ल बंद कैसे करने की ?

दादाश्री : कोई गुंडा तुम्हारी होटल में आ गया, उसको तुमने झगड़ा करके निकाल दिया। बाद में तुम 'दादा भगवान' को नमस्कार कर के बोलना कि, 'हे भगवान! मुझे ऐसा करने का विचार नहीं था, मगर मुझे करना पड़ा', तो ऐसे हमारे सामने आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान वहाँ घर पर बैठकर भी याद करके करोगे, तो तुम्हारी दख़ल पूरी हो जायेगी।

क्या करने का, समझ गये न? देखो, ऐसा बोलने का, 'हे दादा

भगवान, हमने गुंडे को बहुत मार दिया। हमको पश्चाताप होता है। उसकी मैं माफी माँगता हूँ, फिर ऐसा नहीं करूँगा' ऐसे बोलेगा तो बहुत हो गया।

आपकी दख़ल कब कही जायेगी कि जब गुंडे को आपने मार दिया और पीछे बोलो कि गुंडे को तो मारना ही चाहिये। तो यह दख़ल हो गई। तुम्हारा अभिप्राय फिट हो गया कि मारना ही चाहिये। तो दखल चालू रहेगी और अगर तुम्हारा ओपिनियन ऐसा फिट हो गया कि मारना नहीं चाहिये और ऊपर से प्रतिक्रमण किया तो तुम्हारी दख़ल बंद हो जायेगी।

यह सब वीतराग भगवान की बात है। चौबीस तीर्थंकरों की बात है। कितनी अच्छी यह बात है!!!

आपकी जेब जो काटता है, वह सचमुच गुनहगार नहीं है। वह तो निमित्त है। गुनाह आपका है। आपको आपके गुनाह का फल मिलने का (समय) हुआ, तब वह निमित्त मिला है। उसका कोई गुनाह नहीं है। आज आपके गुनाह से वह निमित्त आ गया है। वह (जेब) काटने वाला तो अभी इधर से पैसा काट कर ले गया। उसको तो बहुत आनंद है, होटल में जायेगा, खाना खायेगा। दु:ख किसको होता है? जिसको दु:ख है उसका ही गुनाह है और वो आदमी (जेबकतरा) जब पुलिस के हाथ में पकड़ा जायेगा, तब उसका गुनाह पकड़ा जायेगा। आज आपको दु:ख होता है, तो आपका गुनाह पकड़ा गया। ऐसा हरेक मामले में है। आपको कोई गाली दे तो वह गुनाह आपका है, गाली देनेवाले का नहीं। लोग क्या मानते हैं कि ये गाली देता है, इसका ही गुनाह है। चोर ने जेब काटी तो चोर ही गुनहगार है ऐसा बोलते हैं न सब लोग ?

प्रश्नकर्ता : अभी तक तो मैं भी वही मानता था कि गुनहगार चोर ही है।

दादाश्री : आप ही मानते हैं ऐसा नहीं, सारी दुनिया मानती है। मगर आप सोचेंगे तो आपको खयाल में आ जायेगा कि इसका गुनाह नहीं है।

प्रश्नकर्ता : चोर का गुनाह तो अभी नहीं है, लेकिन जब पकड़ा जाता है, तब गुनाह क्यों हो जाता है?

दादाश्री : नहीं, उस टाइम तो उसका गुनाह पकड़ा गया। तुमने पहले चोरी की थी, तो आज पकड़े गये। ऐसा उसने चोरी आज की मगर पुलिस पकड़ेगी तब उसका गुनाह पकड़ा जायेगा। 'भुगते उसी की भूल', जो भुगतता है उसी की भूल है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी कभी कभी ऐसा लगता है, इस संसार में बहुत बड़ा अन्याय होता है।

दादाश्री : इस संसार में कभी अन्याय नहीं होता। जो भी कुछ होता है, वह न्याय ही होता है। हरेक जीव अपना खुद का हॉल एन्ड सॉल रिस्पोन्सिबल है। दूसरा कोई इसमें दखलंदाजी नहीं करता है। दूसरा कोई जो कुछ करता है, वह निमित्त है। कोई किसी को कुछ कर सकनेवाला ही नहीं है। मगर अपनी ही भूल से वह निमित्त मिलता है। जिसकी भूल नहीं, उसको निमित्त नहीं मिलता। भगवान महावीर को कोई निमित्त नहीं था। क्योंकि उनकी भूल खत्म हो गयी थी। भूल थी तब तक उनके भी निमित्त थे और तब तक उनको उपसर्ग भी आये थे। किसी भी जीव को कुछ भी दु:ख नहीं देना चाहिये। कोई अपने को दु:ख दे तो सहन कर लेना चाहिये। किसी को दु:ख देने से बहुत रिस्पोन्सिबिलिटी आती है।

कितने नुकसान झेलोगे ? एक या दो ?

किसी ने तुम्हारी जेब काट ली और पचास हजार चले गये फिर तुम चोर को गाली देते हो मगर वह रूपये फिर वापस आते हैं कि नहीं आते ?

प्रश्नकर्ता : नहीं आयेगा ।

दादाश्री : नहीं? तो तुम एक नुकसान में दो नुकसान झेलते हो। एक नुकसान तो निर्माण हुआ था और आप दूसरा भी खाते हो। किसी का एक ही लड़का हो, वह मर जाये तो लड़का गया, वह एक नुकसान तो हुआ और पीछे रोता है, सर फोड़ता है, कितना दु:खी होता है मगर लड़का क्या वापस आता है ? घर के सभी आदमी रोने लगें तो भी वापस नहीं आता ? ऐसे सभी लोग दोहरा नुकसान झेलते हैं।

पाँच लाख का मकान हो, वो 'मेरा मकान, मेरा मकान' बोलता है मगर मकान जल जाये तो कितना दु:ख होता है? मकान जल गया वो एक नुकसान है, फिर रोता है वो दूसरा नुकसान है।

पाँच लाख का मकान हो और बनाने के बाद जल गया तो दु:ख होता है। कितना दु:ख होता है? पाँच लाख के हिसाब में दु:ख होता है। वह मकान बेच दिया, दस दिन के बाद वह मकान जल गया तो ? उसके पाँच लाख रुपये ले लिये, फिर मकान जल गया तो क्या होगा ?

प्रश्नकर्ता : तब कुछ नहीं, अब अपना क्या ?

दादाश्री : पाँच लाख रुपये अपने घर लाये, और सब रुपये चोरी हो गये, फिर दूसरे दिन मकान जल जाये तो ? तो भी असर नहीं होता न? पाँच लाख रुपये उसके हाथ में नहीं रहे, मकान बेच दिया था, फिर मकान जल गया मगर उसको कुछ असर नहीं होता, क्यों ? वो ममता दु:ख देती है। तुमको ममता है ? यह घड़ी तुम्हारी है, उसकी ममता तुमको है ? ऐसी कितनी सारी चीजों में तुम्हारी ममता है ? ऐसी सब चीजें लिख लें, लिस्ट बना दे तो कितने कागज हो जायेगें ?

प्रश्नकर्ता : बोल नहीं सकते कि कितने कागज हो जायेंगे?

दादाश्री : और जब मरने की तैयारी होती है, तब यह सब इधर ही छोड़कर जाने का। तो दु:ख कौन देता है ? सभी जगह पर ममता की वही दु:ख देती है। मगर तुम पहले से जानते नहीं कि यह सब छोड़ कर जाने का है ? अपने फादर भी छोड़कर चले गये थे, वह आप जानते नहीं है ?

प्रश्नकर्ता : फिर भी जो आँख से दिखता है, उसे मिथ्या कैसे मानें ?

दादाश्री : जब एक्सपीरियेन्स हो जाता है, तब मिथ्या मालूम हो जाता है। अभी एक लड़के ने शादी की तो उसकी वाइफ आयी, वह मिथ्या नहीं लगती है। वह सत्य ही लगता है। और छह महिने के बाद डिवोर्स दिया फिर ? तो मिथ्या हो गया। जब तक एकस्पिरियन्स नहीं हुआ, तब तक मिथ्या नहीं लगता। आँख से दिखता है, बुद्धि से समझ में आता है, वह सब मिथ्या है। आँख से जो दिखता है वह सब भ्रांति है, सच्ची बात नहीं है। जैसे एक आदमी ने दारू पी, खूब दारू पी, फिर जो बोलता है, वो दारू के नशे में बोलता है। ऐसे ही ये सब लोग भी नशे में ही बात करते हैं। मोह के नशे में हैं। मोह की दारू बहुत भारी है। ये सब लोग सारा दिन मोह के नशे में ही घूमते हैं।

यह वाइफ को 'मेरी है, मेरी है' करता है, मगर जब उसके साथ एक घंटा झगड़ा हो जाये फिर? फिर क्या होता है? डिवोर्स. और बाप-बेटे का एक घंटा झगड़ा हो गया तो? तो दोनों कोर्ट में चले जायेंगे। ऐसा ये सब मिथ्या है। मिथ्या सत्य कैसे हो जायेगा? कभी नहीं होगा। All these relatives are only temporary adjustment, not permanent adjustment ! कोई परमानेन्ट एड़जस्टमेन्ट तुमने देखा ? नहीं ? सब टेम्पररी ? क्योंकि यह देह भी टेम्पररी है, तो वह टेम्पररी में से परमानेन्ट कैसे हो जायेगा ? और आप खुद आत्मा हैं, वो परमानेन्ट है।

उसका रियलाइज़ेशन हो जाये तो फिर परमानेन्ट का अनुभव होता है। फिर ये मोह चला जाता है, निरंतर परमानेन्ट सुख, निरंतर परमानंद ही रहता है।

निमित्त को निमित्त समझें, तो ?

एक आदमी जानबूझकर पत्थर मारता है और एक बन्दर है, वह आपके ऊपर पत्थर गिराता है। वो पत्थर आपको बहुत ज़ोर से लग जाता है। दोनों के ऊपर आपका भाव बिगड़ता है, दोनों के ऊपर आपको गुस्सा आता है ? पर आपने देखा कि ये तो बन्दर है, तो आप क्या करते हैं?

प्रश्नकर्ता : उसे भगा देते हैं।

दादाश्री : मगर उस पर गुस्सा क्यों नहीं किया ?

प्रश्नकर्ता : कुछ परपजली (इरादा से) तो नहीं किया है उसने।

दादाश्री : और वह आदमी जानबूझकर पत्थर मारता है तो?

प्रश्नकर्ता : वहाँ गुस्सा आ जाता है।

दादाश्री : वह जो पत्थर मारता है न, वे सभी बन्दर की तरह ही हैं। आपको यह खयाल नहीं है। आपको लगता है कि वह जानबूझकर मारता है मगर ऐसा नहीं है। वह भी बन्दर की तरह ही है। हम देखते हैं कि सब बंदर की तरह ही हैं। इतना समझ गये तो कितनी गलती कम हो जायेगी !

जहाँ झगड़ा है, वहाँ पशुता है। भगवान ने क्या कहा है कि तुमको दो गाली तुम्हारा पड़ौसी दे, तो (वास्तव में) वो देता ही नहीं। बन्दर पत्थर मारता है, उस तरह समझ जाने का है। वह तुम्हारे ही कर्म का फल मिलता है और वह तो निमित्त है। तुम को गाली पसंद हो तो फिर तुम व्यापार करना। उसको तीन गाली दोगे तो तीन गाली

वापस आयेगी। पाँच गाली दोगे तो फिर पाँच आयेगी। जितनी गाली दोगे उतनी ही वापस आयेगी। एक दफे कुछ भी नहीं बोला तो ये तुम्हारा खाता पूरा हो गया। मोक्ष में जाना है, तो सब खाते बंद तो करने पड़ेंगे न? कोई भी आदमी नुकसान करे तो वह निमित्त ही है और निमित्त को मारने से क्या फायदा ?

इस जन्म का नहीं होगा तो पिछले जन्म का है। यह दुनिया ऐसी ही है। नयी कोई चीज नहीं मिलेगी। जो दिया है वही मिलेगा। तुमको पसंद नहीं हो तो वह फिर मत दो। पसंद हो तो ही दो। वही धर्म समझने का है। ऐसा धर्म समझ कर आगे कभी साक्षात्कार के संजोग मिलते है। मगर धर्म ही समझे नहीं तो फिर क्या करें? पाशवता ही हो जाये। पड़ौसी के साथ झगड़ा करता है, लड़ाई करता है, यह क्या मानवता है ?

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में कभी कभी करना पड़ता है।

दादाश्री : व्यवहार में जो करना पड़े, वो न्याय से होना चाहिये। व्यवहार में कोई हर्ज नहीं, पर न्याय से होना चाहिये। न्याय के बाहर नहीं होना चाहिये।

कुदरत का असल न्याय !

प्रश्नकर्ता : किसी आदमी में हार्ट की प्यॉरिटी रहती है, वह अच्छा है, प्रामाणिक है, फिर भी उसे संसार में प्रमोशन क्यों नहीं मिलता ?

दादाश्री : नहीं, वह प्रमोशन तो नहीं मिले मगर उसको खाना भी नहीं मिले, क्योंकि वह प्रारब्ध के हाथ में है। खाना मिलना, प्रमोशन मिलना, वह सब प्रारब्ध के हाथ में है।

प्रश्नकर्ता : वह प्रारब्ध कौन लिखता है ?

दादाश्री : कोई लिखनेवाला नहीं है। वह ऐसे (स्वतः) ही

लिखा जाता है, जैसे मशीन चलता है न ? ऐसे ही चलता है।

प्रश्नकर्ता : अपने प्रारब्ध में ऐसे दु:ख भुगतने का क्यों आता है? इसमें भूल कहाँ होती है?

दादाश्री : दूसरे को दु:ख देने का भाव किया, उसका फल दु:ख ही आयेगा और दूसरे को सुख देने का भाव किया तो उसका फल सुख ही आयेगा।

प्रश्नकर्ता : मगर हम सुख देने का भाव करते हैं, फिर भी ऐसा तो नहीं होता।

दादाश्री : नहीं, यह पहले जो भाव हो गये थे, उसका फल ये भव में मिलता है और अभी नये भाव करते हैं, उसका आगे के भव में फल आयेगा, इस भव में नहीं आयेगा। पीछे जो भाव किये थे, उसका फल तैयार हो गया और फल परिपक्व होने के बाद में मिलता है।

प्रश्नकर्ता : पिछले भव के कर्म के फल से आज कोई आदमी चोरी करता है, पर उसको आगे के जन्म में कुछ बिगड़े नहीं, ऐसा हो सकता है ?

दादाश्री : हाँ, चोरी करने के बाद यदि वह बहुत पश्चाताप करे कि, 'मैंने बहुत खराब किया, ऐसा नहीं करना चाहिये।' तो आगे के भव के लिए बहुत अच्छा होगा।

प्रश्नकर्ता : पश्चाताप तो मन का है न ?

दादाश्री : हाँ, बस ऐसा पश्चाताप हो गया, तो बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसे जेल में भी तो जाना पड़े न ?

दादाश्री : जेल में गया, वो तो चोरी की उसका फल मिला।

प्रश्नकर्ता : ऐसे फल मिलने से उसका समाज में जो मान है,

इज्ज़त है, वो तो चले जायेंगे न ?

दादाश्री : हाँ, चोरी की तो समाज में मान रहता ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : एक बेटा दारू पीकर आता है और घर में आने के बाद अपने माँ-बाप को मारता है, तो उसमें भूल किसकी है?

दादाश्री : माँ-बाप की। जो मार खाता है, उसकी ही भूल है। दूसरे माँ-बाप को क्यों मार नहीं पड़ती? इनको क्यों मारता है? वह माँ-बाप की भूल है।

प्रश्नकर्ता : तो माँ-बाप को मार नहीं खानी चाहिये न फिर?

दादाश्री : मार नहीं खायेगा तो क्या करेगा ?

प्रश्नकर्ता : अगर कुछ कर सकता है तो मार नहीं खाना न!

दादाश्री : मार नहीं खायेगा, तो क्या करेगा ? वह मार ही मारेगा। वह दारू पियेगा, सब कुछ करेगा और पीने के पानी के अन्दर ज़हर भी डाल देगा और तुम सबको मार डालेगा।

प्रश्नकर्ता : तो इसमें बाप का क्या गुनाह है?

दादाश्री : माँ-बाप का बहुत ही गुनाह है।

प्रश्नकर्ता : कैसे ?

दादाश्री : वह पूर्वजन्म का हिसाब है। देखो, मैं तुमको समझाता हूँ। किसी ने आपकी जेब काट ली और पाँच हजार लेकर भाग गया और वह फिर आप के हाथ में नहीं आया। सब लोग क्या बोलेंगे कि 'जो भाग गया उसकी भूल है।' आप तो यहाँ रोते है। कौन रोता है? जिसकी भूल है, वो ही रोता हैं। चोर तो अभी मौज कर रहा है, वो जब पकड़ा जायेगा तब रोयेगा, तब उसकी भूल है। आज तो जो रोता है, वही पकड़ा गया है। यह तो 'भुगतता है उसी की भूल'। ऐसे ये

फादर-मदर आज पकड़े गये हैं।

आपकी होटेल में किसी आदमी ने सौ रूपये का चाय-नाश्ता किया और रुपये आपको नहीं दिये, तो वह आपकी भूल है, उसकी भूल नहीं है। आप आज पकड़े गये। इसलिए उसको गाली मत दो। भगवान ऐसा बोलते हैं कि आपकी भूल से ही वो आपको मिला। वो तो आपके सौ रूपये का नुकसान करने के लिए निमित्त है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, इस संसार में हम रहते हैं तो ऐसा हर बार छोड़ देने से काम कैसे चलेगा ?

दादाश्री : नहीं चलेगा तो फिर क्या करोगे तुम ?

प्रश्नकर्ता : देखिए, हमारा होटल है। उसमें झगड़े करने वाले लोग भी आते हैं। अगर उनको रोकेंगे नहीं, तो वे हमेशा झगड़े करते ही रहेंगे।

दादाश्री : उनको तो रोकना ही चाहिये। रोकने में कोई हर्ज नहीं है। मगर जिसने मार खाई उसकी भूल है। आपको मारा तो आपकी भूल है। जो सहन (बर्दाश्त) करता है, उसकी भूल है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर सहनशीलता कितनी हद तक आदमी को रखनी चाहिये ?

दादाश्री : सहनशीलता रखने की जरूरत ही नहीं। सहनशीलता ज्यादा रखेंगे तो स्प्रिंग की तरह उछलेगी और झगड़े हो जायेंगे। सहनशीलता कायदेसर (नियमानुसार) नहीं है।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब यह कि कर्म तो करते ही जाना?

दादाश्री : कर्म तो करना ही है। कोई गुंडा आये तो बोलने का कि 'हम तुमको मार देगा।' हम खुद मार खायें ऐसा नहीं करने का। लेकिन उसके सामने हो गये, फिर जिसने मार खाया उसकी भूल है।

एक आदमी स्कूटर पर जाता है और सामने से एक कार आकर उसको टकरा गई और उसका पाँव तोड़ दिया, तो वहाँ पर किसकी भूल है ? जिसका पाँव टूट गया उसकी भूल है। कारवाला तो जब पकड़ा जायेगा तब उसकी भूल है। मगर स्कूटरवाले को, उसकी भूल हो गयी थी, उसका फल मिल गया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसकी भूल कैसे, दादाजी ?

दादाश्री : पूर्वभव की भूल है, आज उसको फल मिल गया। वह सबको क्यों नहीं मिलता ? यह हिसाब है। यह सब आपको मिला है, हम आपको मिले हैं, यह पूर्वभव का हिसाब है। आपको कुछ समाधान हुआ क्या ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हो गया।

दादाश्री : यह जो मच्छर है वह कभी काटते है, तो आदमी क्या करता है ? उसको मार देता है। और वह 'बबूल का शूल' ऐसे रास्ते में पड़ा है और आप बिना चप्पल चलते हैं, तो आपका पाँव ऐसे उसके ऊपर आ गया तो पाँव में लगा, तो उसके लिए कौन गुनहगार है ? वहाँ पर तो मच्छर गुनहगार है, इसके लिए उसको मार दिया लेकिन इधर वह शूल पाँव के अंदर चली गयी, वहाँ कौन गुनहगार है ?

प्रश्नकर्ता : हम खुद ही गुनहगार हैं।

दादाश्री : हाँ, ऐसे ही है। आपकी ही भूल है। जो कोई आपको दुःख देता है यह सब आपकी भूल से ही देता है और सुख देता है वह भी आपने जो सुख दिया है, तो सुख आता है। आपकी कुछ भूल है, इसलिए दुःख है। हमको कोई दुःख नहीं है, क्योंकि हमारी कोई भूल नहीं है।

अपनी भूल से छूटना कैसे ?

दूसरे को कोई तकलीफ नहीं हो ऐसा होना चाहिये और अपनी

भूल से किसी को परेशानी हो गई तो क्या करने का, कि उसके अंदर शुद्धात्मा भगवान है, उनके पास माफी माँगने का कि, 'हे शुद्धात्मा भगवान, आज मेरे से उस आदमी को बहुत परेशानी हो गई, बहुत नुकसान हो गया। हे भगवान, उसकी मैं माफी माँगता हूँ, मेरी इच्छा नहीं थी, फिर भी ऐसा हो गया है, मुझे माफ करो। फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा। ऐसा नहीं होना चाहिये।' ऐसा आप भगवान से बोलो। क्योंकि दुनिया में सभी जीव मात्र के अंदर भगवान बैठे हैं। सभी देहधारी के अंदर शुद्ध चेतन रूप बैठे हैं। भगवान ये नोंध(नोट) करते हैं कि 'रवीन्द्र ने ये बुरा किया, इसको नुकसान किया' और फिर इसका आपको फल मिलता है। रोज सुबह में ऐसा बोलने का कि 'मुझसे किसी भी जीव को किंचित्मात्र दु:ख न हो'। ऐसी भावना करके बाहर निकलने का। इतना करेगा ? तो कल से ही चालू कर देना। फिर किसी को दु:ख हो गया तो, 'हे शुद्धात्मा भगवान, ये इतनी मेरी गलती हो गई, मुझे माफ कर दो, फिर गलती नहीं करेंगे।' इतना ही बोलने का, दूसरा कुछ नहीं बोलने का। बाहर मूर्ति के पास जाना-नहीं जाना, वो तो आपकी मर्ज़ी की बात है, मगर सच्चे भगवान तो अंदर ही है।

प्रश्नकर्ता : समझ लो मेरे से गलती नहीं हुई है, तो?

दादाश्री : सारा दिन गलती ही होती है। आपकी कितनी गलती होती है, मालूम है ? रोज की पाँच हजार गलतियाँ होती हैं लेकिन आपको गलती का पता ही नहीं है। क्योंकि गलती की तलाश कैसे करते हो ? गलती तो, इतनी बड़ी बड़ी गलतियाँ है, बहुत गलतियाँ हैं। किसी के साथ गुस्सा हो गया, किसी की कोई चीज़ लेने का भाव हो गया, व्यापार में कपट करके ज्यादा ले लेने का विचार हो गया, ऐसा विचार भी हो तो भी गलती है और उसकी भगवान के पास माफी माँग लेने की।

ऐसी गलती होती है कि नहीं होती है ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसी गलती तो करता हूँ।

दादाश्री : आप तो कोई कोई बड़ी गलती देख सकते हैं, मगर आज से आप ज्यादा देखेंगे। जब हम आत्मसाक्षात्कार करा देंगे फिर बहुत दिखेगा, सूक्ष्म भी दिखेगा। और जितनी गलतियाँ देखोगे, उतनी गलती की माफी माँग लो, तो वो गलती चली जायेगी, खतम हो जायेगी। बस वही धर्म है, चौबीस तीर्थंकरों का। बाकी, शास्त्र तो एक आदमी के लिए नहीं लिखे हैं, सबके लिए लिखे हैं। उसमें जो लिखा है, वे सब चीज़ें आपके लिए नहीं हैं। आपको जिसकी ज़रूरत है, उतनी ही बात आपके लिए है। आपको क्या ज़रूरत है, आपकी प्रकृति को क्या अनुकूल है, वही बात ले लेने की है। दूसरी सब बात अपने को क्या करनी है ? भगवान ने शास्त्र तो सबके लिए लिखे हैं। अपनी प्रकृति को अनशन अनुकूल आये तो अनशन करना, अनुकूल न आये तो मत करना।

'निजदोष क्षय' का साधन !

प्रश्नकर्ता : स्वरूप का ज्ञान न मिले, तब तक क्या करना चाहिये ?

दादाश्री : तब तक भगवान की बात है, उसकी आराधना करनी है। वीतराग भगवान की दो बातें करने की हैं। एक तो आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करने चाहिये। भूल से अपने हाथ से दूसरे को लग जाये, तो हमे तुरंत ही आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करना चाहिये। जितना आक्रमण या अतिक्रमण हुआ, उन सबकी आलोचना, अपने गुरू हों, उन्हें लक्ष्य में रखकर, अपनी भूल को कबूल करनी चाहिये। फिर प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करना चाहिये। प्रतिक्रमण केश, ओन द मूमेन्ट करना चाहिये। और दूसरी बात ये दुषमकाल है, आर्तध्यान और रौद्रध्यान के विचार होते हैं। उसमें विचार नहीं करना होता है तो भी हो जाता है, तो उसका भी आलोचना,

प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करना चाहिये। श्रीमद् राजचंद्र ने लिखा है, 'मैं तो दोष अनंत का पात्र हूँ करूणाकर।' और दूसरा क्या कहते हैं कि 'देखे नहीं स्व दोष तो तैरे किस उपाय?' अपने दोष अपने को नहीं दिखे तो पार उतरने का मार्ग ही नहीं है। ये लोग दोसौ-दोसौ, पाँचसौ-पाँचसौ प्रतिक्रमण हर रोज करते हैं, तो आपके दोष आपको क्यों नहीं दिखते? मैं आपको बता दूँ ? दोष होते हैं, फिर भी आपको नहीं दिखते तो उसका क्या कारण है?

प्रश्नकर्ता : आप बताइये।

दादाश्री : आपने दोष किये हैं, इसलिए आप 'आरोपी' हैं और आप जज भी हैं और आप वकील भी हैं। खुद ही वकील, खुद ही जज और खुद ही आरोपी। बोलिए, कितना गुनाह मालूम होगा ? खुद जज है, इसलिए बोलता है कि, 'तुम आरोपी है कि नहीं?' तो वकील क्या प्लीडिंग करता है कि, 'सब लोग ऐसा करते हैं, उसमें मेरा क्या गुनाह है?' प्लीडर है कि नहीं तुम्हारे पास ? और इन 'महात्माओं' को प्लीडिंग नहीं होती, क्योंकि ये दोष होते ही 'शूट ओन साइट' प्रतिक्रमण करते हैं। 'शूट ओन साइट' इधर होता है न ? जब हुल्लड़ होता है, तब डी.एस.पी. वहाँ 'शूट ओन साइट' करने को बोलता है। लेकिन अंदर जो हुल्लड़ होता है, तब 'शूट ओन साइट' होना चाहिये। जो दोष होता है, उसका प्रतिक्रमण करो। जितने प्रतिक्रमण किये उतने शुद्ध हो गये और प्रतिक्रमण नहीं किया तो फिर क्या होता है ?

प्रश्नकर्ता : मल्टीप्लिकेशन होता है।

दादाश्री : 'ज्ञानी पुरुष' के अंदर तो दोष ही नहीं रहते, इसलिए उनको निर्ग्रंथ बोला जाता हैं। स्वरूप का ज्ञान होने के बाद वकील नहीं रहता। आप खुद जज हैं, आप ही आरोपी हैं और वकील भी आप हैं, तो कितना गुनाह आपको दिखेगा ? तुम्हारी कितनी गलती दिखेगी ?

प्रश्नकर्ता : अपनी गलती नहीं दिखेगी।

दादाश्री : क्यों नहीं दिखती ?

प्रश्नकर्ता : क्योंकि अज्ञान है।

दादाश्री : हाँ, मगर आप वकील रखते हैं, वह वकालत करता है कि, सब लोग तो ऐसा करते हैं, इसमें मेरी क्या गलती है ? ऐसा बोलता है कि अपना कोई गुनाह नहीं है।

प्रश्नकर्ता : ये वकील अपनी गलती को छिपाते हैं।

दादाश्री : हाँ, वकील सब गलतियों को छिपाते हैं। इन सभी 'महात्माओं' को हर रोज सौ-दोसौ गलतियाँ दिखती हैं और उतने प्रतिक्रमण भी करते हैं। आपने कितने प्रतिक्रमण किये ?

प्रश्नकर्ता : कभी कभी पश्चात्ताप हो जाता है।

दादाश्री : हाँ, ठीक है मगर पश्चात्ताप तो फोरेनवाले के लिए है। अपने लोगों को तो प्रतिक्रमण करने का हैं। ये साधु लोग जो प्रतिक्रमण करते हैं वह तो पुस्तक में अर्धमागधी भाषा में लिखा है, वही प्रतिक्रमण बोलते हैं। प्रतिक्रमण का यथार्थ अर्थ क्या है कि तुमने किसी के साथ अतिक्रमण किया तो फिर तुम्हारे को प्रतिक्रमण करना ही चाहिए। अतिक्रमण नहीं किया, तो प्रतिक्रमण करने की कोई जरूरत नहीं है। सहज भाव से, क्रमण से दुनिया चल रही है मगर अतिक्रमण याने किसी को दु:ख हो जाये ऐसा तुम कुछ करोगे, तो फिर तुम्हारे को प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

- जय सच्चिदानंद

नमस्कार विधि

- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में विचरते तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (४०)
- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विचरते ॐ परमेष्टी भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विचरते पंच परमेष्टी भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विहरमान तीर्थंकर साहिबों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- वीतराग शासन देवी-देवताओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- निष्पक्षपाती शासन देवी-देवताओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- चौबीस तीर्थंकर भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।
- श्री कृष्ण भगवान को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- भरत क्षेत्र में हाल विचरते सर्वज्ञ श्री दादा भगवान को निश्चय से अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- दादा भगवान के सर्व समकितधारी महात्माओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- सारे ब्रह्मांड के समस्त जीवों के रियल स्वरूप को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- रियल स्वरूप ही भगवत् स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को भगवत् स्वरूप से दर्शन करता हूँ। (५)
- रियल स्वरूप ही शुद्धात्म स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को शुद्धात्म स्वरूप से दर्शन करता हूँ। (५)
- रियल स्वरूप ही तत्त्व स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को तत्त्वज्ञान रूप से दर्शन करता हूँ। (५)

(वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी को परम पूजनीय श्री दादा भगवान के माध्यम द्वारा प्रत्यक्ष नमस्कार पहुँचते है। कौंस में लिखी संख्यानुसार उतनी बार प्रतिदिन एक बार बोलना)

नौ कलमें

१. हे दादा भगवान ! मुझे किसी भी देहधारी जीवात्मा का किंचित्मात्र भी अहम् न दुभे, न दुभाया जाये या दुभाने के प्रति अनुमोदना न की जाये ऐसी परम शक्ति दीजिये।

मुझे किसी देहधारी जीवात्मा का किचिंत्मात्र भी अहम् न दुभे ऐसी स्याद्वाद वाणी, स्याद्वाद वर्तन और स्याद्वाद मनन करने की परम शक्ति दीजिये।

२. हे दादा भगवान ! मुझे किसी भी धर्म का किंचित्मात्र भी प्रमाण न दुभे, न दुभाया जाये या दुभाने के प्रति अनुमोदना न की जाये ऐसी परम शक्ति दीजिये।

मुझे किसी भी धर्म का किंचित्मात्र भी प्रमाण न दुभाया जाये ऐसी स्याद्वाद वाणी, स्याद्वाद वर्तन और स्याद्वाद मनन करने की परम शक्ति दीजिये।

३. हे दादा भगवान ! मुझे किसी भी देहधारी उपदेशक साधु, साध्वी या आचार्य का अवर्णवाद, अपराध, अविनय नहीं करने की परम शक्ति दीजिये।

४. हे दादा भगवान ! मुझे किसी भी देहधारी जीवात्मा के प्रति किंचित्मात्र भी अभाव, तिरस्कार कभी भी न किया जाये, न करवाया जाये या कर्ता के प्रति न अनुमोदित किया जाये, ऐसी परम शक्ति दीजिये।

५. हे दादा भगवान ! मुझे किसी भी देहधारी जीवात्मा के साथ कभी भी कठोर भाषा, तंतीली भाषा न बोली जाये, न बुलवाई जाये या बोलने के प्रति अनुमोदना न की जाये, ऐसी परम शक्ति दीजिये।

कोई कठोर भाषा, तंतीली भाषा बोलें तो मुझे मृदु-ऋजु भाषा बोलने की शक्ति दीजिये ।

६. हे दादा भगवान ! मुझे किसी भी देहधारी जीवात्मा के प्रति स्त्री, पुरुष या नपुंसक, कोई भी लिंगधारी हो, तो उसके संबंध में किचिंत्मात्र भी विषय-विकार संबंधी दोष, इच्छाएँ, चेष्टाएँ या विचार संबंधी दोष न किया जाय, न करवाया जाये या कर्ता के प्रति अनुमोदना न की जाये, ऐसी परम शक्ति दीजिये।

मुझे निरंतर निर्विकार रहने की परम शक्ति दीजिये।

७. हे दादा भगवान ! मुझे किसी भी रस में लुब्धता न हो ऐसी शक्ति दीजिये।

समरसी आहार लेने की परम शक्ति दीजिये।

८. हे दादा भगवान ! मुझे किसी भी देहधारी जीवात्मा का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष, जीवित अथवा मृत किसी का किंचित्मात्र भी अवर्णवाद, अपराध, अविनय न किया जाये, न करवाया जाये या कर्ता के प्रति अनुमोदना न हो, ऐसी परम शक्ति दीजिये।

९. हे दादा भगवान ! मुझे जगत कल्याण करने में निमित्त बनने की परम शक्ति दीजिये, शक्ति दीजिये, शक्ति दीजिये।

(इतना आप दादा भगवान से माँगा करें। यह प्रतिदिन यंत्रवत् पढने की चीज़ नहीं है, हृदय में रखने की चीज़ है। यह प्रतिदिन उपयोगपूर्वक भावना करने की चीज़ है। इतने पाठ में समस्त शास्त्रों का सार आ जाता है।)

शुद्धात्मा के प्रति प्रार्थना

हे अंतर्यामी परमात्मा। आप प्रत्येक जीवमात्र में बिराजमान हैं वैसे ही मुझ में भी बिराजमान हो! आपका स्वरूप, वही मेरा स्वरूप है। मेरा स्वरूप शुद्धात्मा है।

हे शुद्धात्मा भगवान ! मैं आपको अभेदभाव से अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

अज्ञानवश मैंने जो जो ★★ दोष किये हैं, उन सभी दोषों को आपके समक्ष ज़ाहिर करता हूँ। उनका हृदयपूर्वक बहुत पश्चाताप करता हूँ और आपसे क्षमायाचना करता हूँ। हे प्रभु ! मुझे क्षमा करें, क्षमा करें, क्षमा करें और फिर से ऐसे दोष नहीं करुँ, ऐसी आप मुझे शक्ति दीजिये, शक्ति दीजिये, शक्ति दीजिये।

हे शुद्धात्मा भगवान ! आप ऐसी कृपा करें कि हमारे भेदभाव छूट जायें और अभेद स्वरूप की प्राप्ति हो जाये! मैं आप में अभेद स्वरूप से तन्मयाकार रहूँ।

(★★ जो दोष हुए हो वे मन में ज़ाहिर करें)

दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित हिन्दी - अंग्रेजी पुस्तकें

१ ज्ञानी पुरूष की पहचान
२ सर्व दु:खो से मुक्ति
३ कर्म का विज्ञान
४ आत्मबोध
५ यथार्थ धर्म (प्रकाशनाधीन)
६ जगत कर्ता कौन ? (प्रकाशनाधीन)
७ अंत:करण का स्वरूप (प्रकाशनाधीन)
८ मैं कौन हूँ ?
९ टकराव टालिए
१० हुआ सो न्याय
११ एडजस्ट एवरीव्हेयर
१२ भूगते उसी की भूल
१३ वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी

1. **Adjust Everywhere**
2. **The Fault of the sufferer**
3. **Whatever has happened is Justice**
4. **Avoid Clashes**
5. **Anger**
6. **Worries**
7. **The Essence of All Religion**
8. **Shree Simandhar Swami**
9. **Pure Love**
10. **Death : Before, During & After...**
11. **Gnani Purush Shri A.M.Patel**
12. **Who Am I ?**
13. **The Science of Karma**
14. **Ahimsa (Non-violence)**
15. **Money**
16. **Celibacy : Brahmcharya**
17. **Harmony in Marriage**
18. **Pratikraman**
19. **Flawless Vision**
20. **Generation Gap**
21. **Apatvani-1**

प्राप्तिस्थान

पूज्य डॉ. नीरुबहन अमीन तथा आप्तपुत्र दीपकभाई देसाई

अडालज : त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सीटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे, अडालज, जी. गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात.
फोन : (०७९) २३९७४१००, **Email :** info@dadabhagwan.org

अहमदाबाद : दादा दर्शन, ५, ममतापार्क सोसायटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे, उस्मानपुरा, अहमदाबाद-३८००१४.
फोन : (०७९)२७५४०४०८, २७५४३९७९

मुंबई : फोन : (०२२) २४१३७६१६

सुरत : श्री विठ्ठलभाई पटेल, विदेहधाम, ३५, शांतिवन सोसायटी, लंबे हनुमान रोड, सुरत. फोन : (०२६१) २५४४९६४

राजकोट : श्री अतुल मालधारी, माधवप्रेम एपार्टमेन्ट, माई मंदिर के पास, 11, मनहर प्लोट, राजकोट. फोन : (०२८१) २४६८८३०

चेन्नाई : अजितभाई सी. पटेल, ९, मनोहर एवन्यु, एगमोर, चेन्नाई-८ फोन : (०४४) ५२१४६६५२

U.S.A. : Dada Bhagwan Vignan Institue : Dr. Bachu Amin, 100, SW Redbud Lane, Topeka, Kansas 66606, U.S.A.
Tel : 785-271-0869, E-mail : bamin@cox.net
Dr. Shirish Patel, 2659, Raven Circle, Corona, CA 92882
Tel. : 951- 734-4715, E-mail : shirishpatel@sbcglobal.net

U.K. : Mr. Maganbhai Patel, 2, Winifred Terrace, Enfield, Great Cambridge Road, London, Middlesex, ENI 1HH
Tel : 020-8245-1751
Mr. Ramesh Patel, 636, Kenton Road, Kenton Harrow.
Tel.:020-8204-0746,E-mail: dadabhagwan_uk@yahoo.com

Canada : Mr. Bipin Purohit, 151, Trillium Road, Montreal, Quebec H9B 1T3, Canada.
Tel. : 514-421-0522, E-mail : bipin@cae.ca

Africa : Mr. Manu Savla, Nairobi, Tel : (R) 254-020- 3744943

Website : (1) www.dadabhagwan.org (2) www.dadashri.org (3) www.ultimatespirituality.org

दु:ख तो only wrong belief ही है। जिसको wrong belief है, वहाँ दु:ख है। जिसको wrong belief नहीं, वहाँ दु:ख ही नहीं है।

\- दादाश्री